sarvodayajagat.com
अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

Sarvodaya Jagat - Voice of Nonviolent Revolution
वर्ष: 48, अंक : 05, 16 - 31 अक्टूबर, 2024
₹ 20/-

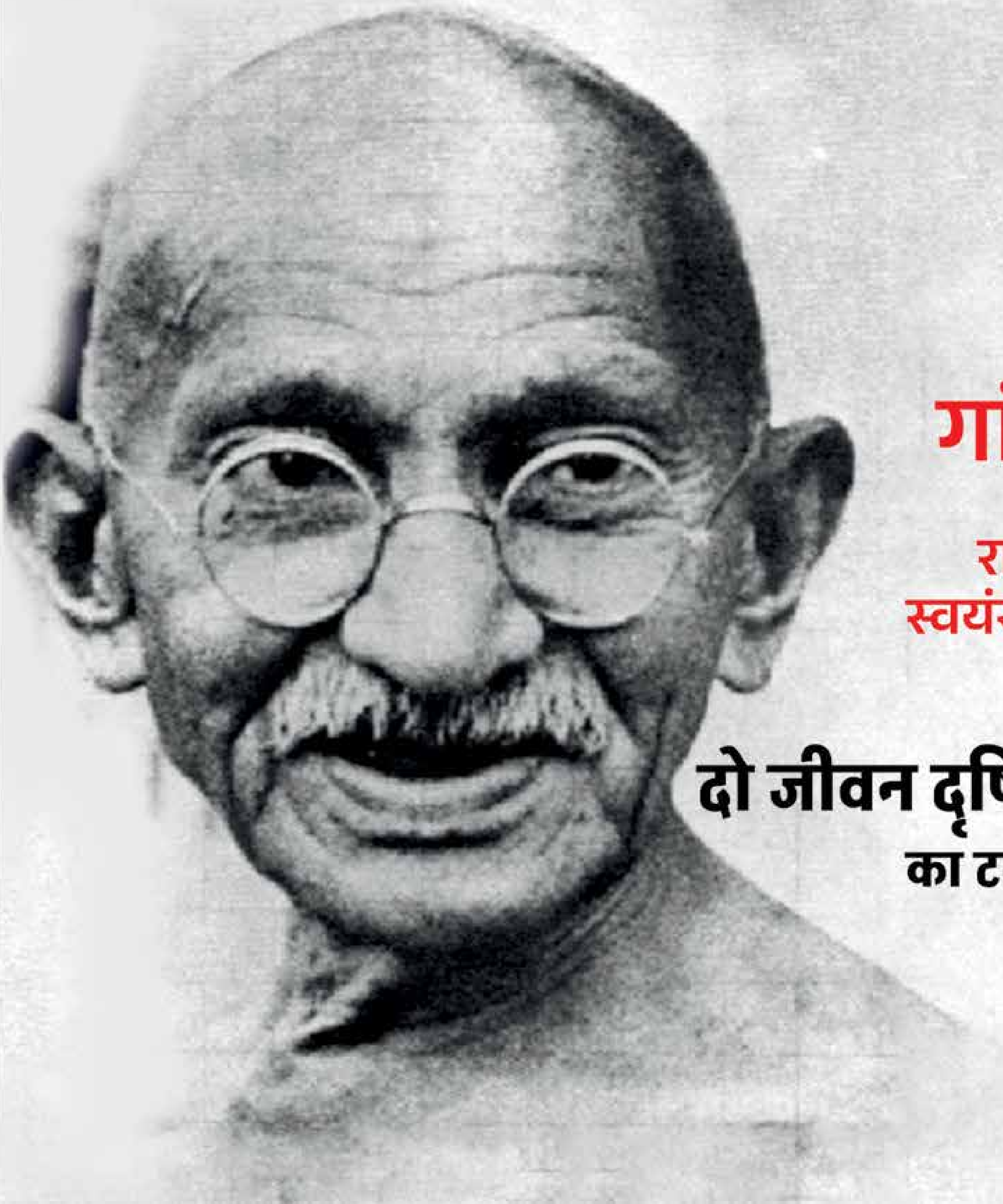

गांधी बनाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

दो जीवन दृष्टियों का टकराव

सर्व सेवा संघ (अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रांति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

Sarvodaya Jagat - Voice of Nonviolent Revolution

वर्ष: 48, अंक : 05, 16 - 31 अक्टूबर, 2024

sarvodayajagat.com

संपादकीय कार्यालय
सर्वोदय जगत
राजघाट, वाराणसी - 221001 (उ.प्र.)
फोन.: 95551 53878

मुख्यालय:
सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम, वर्धा - 442102 (महाराष्ट्र)
फोन.: 07152-284091

प्रधान संपादक
बिमल कुमार
sarvodayajagat.editorial@gmail.com

कार्यालय प्रभारी:

वाराणसी : सुरेन्द्र नारायण सिंह (9451938269)

कम्पोजिंग, लेआउट और विज्ञापन:
तारकेश्वर सिंह (9450243008)
sarvodayajagat@gmail.com

सेवाग्राम प्रतिनिधि:
सचिन उगले (7620277735)
ugale.sachin359@gmail.com

प्रभारी सर्वोदय साहित्य स्टाल :
अनूप नारायण आचार्य (8765113621)
manager.sarvodayastall@gmail.com

सर्व सेवा संघ के पदाधिकारी

अध्यक्ष, **चंदन पाल**
9433022020 / *chandanpalsecre44@gmail.com*

महामंत्री, **गौरांग चन्द्र महापात्र**
9040135842 / *gcmohapatra@gmail.com*

प्रबंधक ट्रस्टी, **शेख हुसैन**
9869289448 / *shaikhdosti@gmail.com*

मंत्री, **अरविन्द अंजुम**
8874719992 / *arvindanjum5@gmail.com*

मंत्री, **अरविन्द कुशवाहा**
9451764659 / *akkm159@gmail.com*

संयोजक, प्रकाशन समिति, **अशोक भारत**
8709022550 / *arvindanjum5@gmail.com*

अन्दर के पन्नों में...

03 गांधी बनाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : दो जीवन दृष्टियों का टकराव सम्पादकीय
04 क्या दलीय लोकतंत्र से आगे कोई रास्ता नहीं है?
05 भाईचारे में गिरावट: सर्वोदय सिद्धांतों से विचलन
06 सर्वोदय के अनन्य साधक : राधाकृष्ण जन्मशताब्दी पर विशेष
09 जेपी आन्दोलन के सबक

रिपोर्ट

10 सत्याग्रह देश बचाने के लिए
11 संथाल परगना के बांग्ला-भाषी मुसलमान भारतीय हैं और...

गातांक से आगे

13 राजघाट परिसर : साजिश की किस्सागोई
14 विकास के नाम पर विध्वंस की कहानी
15 गैर कानूनी तरीके से एक ऐतिहासिक विरासत का गिराया जाना

गतिविधियां एवं समाचार

05 सोनम वांगचुक - लद्दाख से उठी हिमालय की आवाज
12 साइकिल पाकर खिले बालिकाओं के चेहरे
17 अभिव्यक्ति की आजादी और राज्य की संस्थाओं को नियंत्रित करने...
18 लोहिया का निर्वाण दिवस तथा सर्व सेवा संघ के पूर्व मंत्री राधाकृष्ण...
18 गुमटी विक्रेताओं का उत्पीड़न के विरोध में अनिश्चित कालीन धरना
19 बालिका महोत्सव कार्यक्रम का आगाज

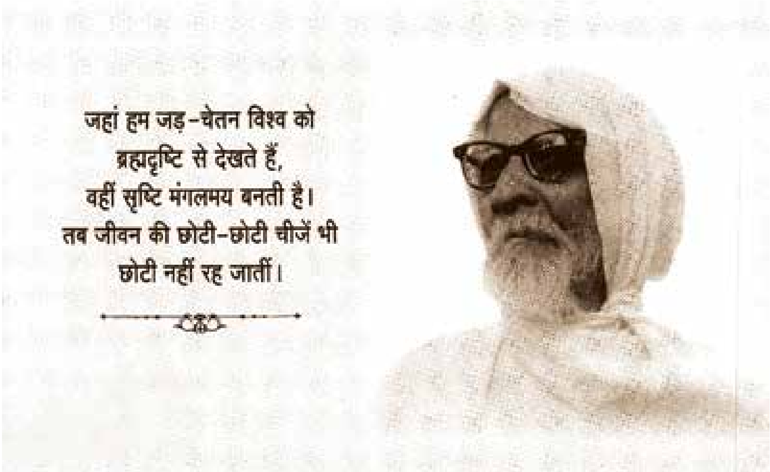

पुराने अंक पढ़ने के लिए क्यू.आर. कोड स्कैन करें या लिंक खोलें
https://sarvodayajagat.com/previous-issues/

सम्पादकीय

गांधी बनाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

दो जीवन दृष्टियों का टकराव

कुछ लोग मानते हैं कि चुनावी प्रक्रियाओं और उनके नतीजों के आधार पर हम तय कर सकते हैं कि भारतीय लोकतंत्र सामान्य होने की दिशा में बढ़ रहा है या नहीं। लेकिन यह सतही निष्कर्ष है। भारतीय समाज में जो वैचारिक संघर्ष चल रहा है और उसके परिणाम स्वरूप भारतीय समाज एवं राष्ट्र का जैसा निर्माण हो रहा है, उसे नहीं समझा जा सकता। हमें यह समझना होगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) अपने लक्ष्य, हिन्दू राष्ट्र, के अनुरूप समाज को बनाने के काम में निरन्तर लगा हुआ है। वहीं दूसरी ओर बी.जे.पी. विरोधी राजनीतिक दल लोकतांत्रिक, सर्वधर्म समभाव, सामाजिक व आर्थिक न्याय, श्रम की प्रतिष्ठा एवं समतावादी आदर्शो वाला समाज बनाने के काम में बहुत कमजोर रहे हैं। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ को वास्तविक चुनौती गांधी की विचारधारा एवं गांधी की जीवन दृष्टि से है।

भारत, गांधी और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के बीच के वैचारिकी संघर्ष के दौर से गुजर रहा है। ये दो सभ्यताओं, दो जीवन दृष्टियों के बीच का टकराव भी है जो लम्बा चलेगा। इस संघर्ष में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, राजसत्ता एवं अन्य वैधानिक संस्थाओं को साम्प्रदायिक बना कर, उनकें माध्यम से अपने लक्ष्य हासिल करने का प्रयास करेगा। जबकि दूसरा पक्ष, गांधी का पक्ष, लोकसत्ता के निर्माण एवं लोक संगठनों के निर्माण से सत्य व न्याय आधारित अहिंसक समाज के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ेगा। अन्ततः राजसत्ता व लोकसत्ता का टकराव अपरिहार्य होगा। गांधी को मानने वाली संस्थाओं पर हमला एवं गांधी विचार पर हमले को इसी परिप्रेक्ष्य में समझना होगा।

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ पूंजीवादी-साम्राज्यवाद की समर्थक रही है, तथा पूंजीवादी-साम्राज्यवाद का उदय जिस योरोपियन आधुनिक सभ्यता के गर्भ से हुआ उसके मूल दार्शनिक व वैचारिक तात्विक आधारों को स्वीकार करती है। जबकि गांधीजी ने योरोपीय आधुनिक सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहा तथा उसकी बुनियादी तात्विक आधारों को खारिज कर दिया था।

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ का जन्म किसी धार्मिक या अध्यात्मिक आन्दोलन से नहीं हुआ। और न ही भारत की विभिन्न अध्यात्मिक धाराओं के समन्वय से हुआ। इसका जन्म अंग्रेजों की एक कुटिल नीति का परिणाम थी। 1857 के विद्रोह के बाद जब भारत में शासन सीधे ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के अन्तर्गत आ गया, और एक शासनतंत्र का निर्माण होने लगा, तो भारतीयों की यह इच्छा प्रकट होने लगी कि भारत के शासन विधान में भारतीयों की भागीदारी सुनिश्चित हो। एक भारतीय नागरिकता विकसित होने लगी। एक भारतीय नागरिक की भावना के उभार से अंग्रेजी शासक सशंकित होने लगे। एक भारतीय नागरिकता की भावना को तोड़ने के लिये शुरु में अंग्रेजों ने दो नीतियों को अपनाया। एक, भारत में देशी राजे-राजवाड़ों की स्वतंत्र सत्ता, अंग्रेजों की सार्वभौम सत्ता (पैरामाउन्टसी) के अधीन है। यानि उनका भारतीय नागरिकता में अपना अलग स्वतंत्र-स्वायत्त स्थान होगा। दूसरे मुसलमानों के लिये अलग निर्वाचक मण्डल बना कर, अंग्रेजों ने मुसलमानों को भी एक अलग नागरिकता का दर्जा दिया। इस प्रकार लोकतंत्र विरोधी (रजवाड़ो), धर्म निरपेक्षता विरोधी (मुस्लिम साम्प्रदायिकता) तथा पूंजीवादी-साम्राज्यवादी (ब्रिटिश शासन) शक्तियों का एक गठजोड़ कांग्रेस के खिलाफ बना। लेकिन इसमे कांग्रेस की यह छवि बनी कि वह एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष एवं पूंजीवादी-साम्राज्यवाद का विरोधी संगठन है। कांग्रेस के इस आधार को तोड़ने की लिये कालान्तर में हिन्दू सम्प्रदायवादी संगठन बनाने के लिए अंग्रेजी शासकों ने भारत के एक वर्ग को उकसाया। ये वर्ग भी कहने लगा कि हिन्दू और मुस्लिम अलग राष्ट्र हैं। इस प्रकार एक भारतीय नागरिकता को खण्ड-खण्ड करने के लिये हिन्दू साम्प्रदायिकता एवं मुस्लिम साम्प्रदायिकता को खड़ा किया गया। यह अंग्रेज परस्त हिन्दू साम्प्रदायिकता भी लोकतंत्र विरोधी, सर्वधर्म समभाव विरोधी तथा पूंजीवादी-साम्राज्यवाद समर्थक थी। इसीलिये इसने कभी भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस एवं अम्बेडकर का साथ नहीं दिया, किन्तु सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद मुस्लिम लीग के साथ मिलकर तीन प्रान्तों में सरकार बनायी। सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया तथा अंग्रेजी शासन का समर्थन किया।

सन् 1934 के बाद जब गांधीजी ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा सर्वधर्म समभाव, पददलितों के उद्धार व जाति व्यवस्था को तोड़ने में तथा अपने रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा पूंजीवादी-साम्राज्यवाद के विकल्प का निर्माण करने में लगा दिया, तो देश भर में हिन्दू सम्प्रदायवादियों द्वारा तीव्र विरोध किया गया। कई बार उनकी हत्या के प्रयास किये गये।

गांधीजी एवं हिन्दू साम्प्रदायिकता के बीच का टकराव केवल सर्वधर्म समभाव, जाति उन्मूलन एवं पूंजीवादी-साम्राज्यवाद विरोध के मुद्दों पर ही नहीं था। साम्प्रदायिकता अपने मूल स्वभाव में अध्यात्मिकता विरोधी है, एक नकारात्मक शक्ति है। अध्यात्मिकता का विपरीत ध्रुव है। साम्प्रदायिकता को अपने को बनाये रखने के लिए एक 'अन्य' की जरुरत पड़ती है, जिस 'अन्य' के खिलाफ नफरत एवं हिंसा का वातावरण बनाये रखे। दूसरी ओर गांधी अध्यात्मिकतावादी थे। एक ऐसी अध्यात्मिकता जो अन्तर-जगत में विकास के माध्यम से चेतना को उच्च से उच्चतर स्तर पर ले जाती है तथा विश्व के 'एकत्व' में विश्वास रखती है। इसलिये ये टकराव, विश्व के 'एकत्व' की धारा तथा 'अन्य के प्रति नफरत एवं हिंसा' की धारा के बीच का टकराव है।

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ का हिन्दुत्व बहिष्करणवादी है जब कि गांधीजी का हिन्दू सर्व समावेशी है। सर्व समावेशी का मतलब यह नहीं है कि सभी मेरे समुदाय में शामिल हो जायें। इसका मतलब है हम सब उसी एक में शामिल हैं। हम भी उसी ब्रह्म से हैं जिससे तुम हो। इस लिये उस ब्रह्म से तुम्हारा भी एकत्व है और हमारा भी एकत्व है। चेतना के उच्चतर स्तर पर हम सबमें एकत्व का भाव सदैव वर्त्तमान रहता है।

नफरत और हिंसा प्रेरित साम्प्रदायिकता, चेतना को सबसे निचले स्तर पर ले जाती है। सबसे निचले स्तर की चेतना यांत्रिक एवं भौतिक वस्तुओं के गुणों को आत्मसात करती जाती है। इसलिये उस पर उच्च चेतना वाले नियम लागू न हो कर भौतिक वस्तुओं एवं यांत्रिकता के नियम लागू होने लगते हैं। यह स्थिति केन्द्रीय उद्योग में काम करने वाले श्रमिक की स्थिति के समान है। उद्योग (फैक्टरी) में काम करने वाला श्रमिक यांत्रिक ढंग से एक यंत्र के पुर्जे की तरह काम करता है। साम्प्रदायिकता के प्रभाव से चेतना के निम्नतम स्तर पर काम करने वाला कार्यकर्त्ता एवं फैक्टरी में यंत्रवत काम करने वाला श्रमिक चेतना के समान स्तर पर ले जाये जाते हैं। इसी कारण साम्प्रदायिकता और पूंजीवादी केन्द्रीकृत उद्योग को गठजोड़ बनने में कोई विरोधाभास नहीं होता।

दूसरी ओर गांधी उच्च चेतना में ले जाने वाले सत्याग्रह एवं रचनात्मक कार्यक्रमों को अपने समाज परिवर्त्तन का आधार बनाते हैं। उच्च चेतना वाला मनुष्य कैसा बाह्य संसार बनायेगा, उसे भी गांधी रेखांकित करते हैं। और इसीलिये वे पूंजीवादी केन्द्रीकृत उद्योग के खिलाफ हैं।

इस बिन्दु पर योरोपीय आधुनिकता का एक और तात्त्विक आधार प्रकट होता है, जिसका गांधी विरोध करते हैं।

योरोपीय आधुनिकता की तत्त्व विवेचना में अन्तर्जगत एवं बाह्य जगत में न तो एकत्व का कोई सूत्र है और न हीं एक निरन्तरता है। दोनों असम्बन्धित, स्वतंत्र एवं स्वायत्त है। गांधी इससे उलट यह मानते हैं कि अन्तर्जगत जिस सत्य का उद्घाटन करता है तथा बाह्य जगत जिस सत्य का उद्घाटन करता है - ये दोनों सत्य एक व्यापक सत्य का हिस्सा हैं - स्वतंत्र एवं स्वायत्त नहीं। गांधी योरोपीय आधुनिकता के इस तात्त्विक आधार को चुनौती देते हैं, जबकि साम्प्रदायिकता इसे चुनौती देने की स्थिति में नहीं हे क्योंकि यह पूंजीवादी-साम्राज्यवाद के सह-अस्तित्व में काम करती है।

गांधी और साम्प्रदायिकता के बीच के संघर्ष का सार यह है कि गांधी समाज की सामूहिक चेतना को उच्च से उच्चतर स्तर पर ले जाते है जबकि साम्प्रदायिकता चेतना को निम्नतम स्तर पर ले जाती है।

-बिमल कुमार

जेपी की 122 वीं जयन्ती (11 अक्टूबर) पर विशेष

क्या दलीय लोकतंत्र से आगे कोई रास्ता नहीं है?

जयप्रकाश नारायण

पिछली सदियों में राजनीति के विकास ने मानव समाज को जहां पहुंचा दिया है, वहां हम मानने लगे हैं कि अब उससे आगे कोई रास्ता नहीं है। मैं मानता हूं कि आज की मौजूदा शासन-व्यवस्था और उसके दावों के संबंध में हमें गंभीरता से सोचना चाहिये तथा उन दोषों को दूर करने के उपाय ढूंढने चाहिये। दलबंदी के झगड़े, सैद्धान्तिक ध्रुवीकरण के बदले स्वार्थ की खींचातानी, सिद्धांतों को किनारे रखकर व्यक्तिगत या निहित स्वार्थों के लिये होने वाले दल-बदल, दलों की अंदरूनी अनुशासनहीनता, अवसरवादी गठबंधन, दलों, प्रतिनिधियों और प्रधानों का स्वेच्छाचार, पैसों का बेहिसाब खर्च, घूसखोरी, यह सब तो सहज ही हमारी नजरों के सामने आता रहता है। हमें अधिक गहरायी में जाना चाहिये।

क्या देश और दुनिया में स्थापित दलीय लोकतंत्र ही सर्वोतम लोकतंत्र है? उसके आगे का कोई मार्ग नहीं? अनुभव यह आया है कि दलीय लोकतंत्र मात्र दलतंत्र बन जाता है। दल भी गुटों में विभाजित होते हैं। अतः लोकतंत्र के स्थान पर 'गुटतंत्र' ही चलता है। उस पर भी नौकरशाही हावी हो जाती है। फिर वह जनता के नाम पर अपनी हुकूमत चलाती है। आज के लोकतंत्र में असली 'लोक' का तो कहीं अता-पता नहीं है। इसलिए दुनिया भर के विचारकों में दलगत लोकतंत्र के विषय में विचार-मंथन चल रहा है।

यह कैसा बहुमत है?

संसदीय लोकतंत्र के कई रूप हैं, जिनमें से एक इस देश में चल रहा है। यह लोकतांत्रिक ढांचा चुनाव प्रथा तथा मताधिकार पर आधारित है। मताधिकार का विचार एक जमाने में बड़ा क्रांतिकारी विचार था, लेकिन हम देख रहे हैं कि उससे सारा समाज कोई बहुत आगे नहीं बढ़ पाया। फिर भी वह कोई निकम्मी चीज है, ऐसी बात नहीं है, लेकिन जब हम आगे जाने की सोचते हैं, तब हमें जरूर देखना और समझना चाहिये कि वोट ही काफी नहीं है।

मतदाता सब कुछ सोच-समझकर मतदान करे, ऐसी स्थिति न तो यहां है और न दुनिया में ही कहीं है। फिर भी हम मानते हैं कि हमारे वोट पर बड़ा संसदीय लोकतंत्र बहुत अच्छी तरह चल रहा है। राज चलाने वाले मानते हैं कि वयस्कों को वोट का अधिकार दे दिया तो आदर्श राज्य-व्यवस्था हो गयी।

हम आज जिसे बहुमत का राज कहते हैं, अगर सचमुच देखा जाय तो वह भी क्या बहुमत का राज होता है? संसद में किसी पार्टी को ज्यादा स्थान मिल जाते हैं, लेकिन फिर भी देश के कुल मतदाताओं का बहुमत उनके पीछे नहीं होता। वोट एक पक्ष को ज्यादा और सीट दूसरे पक्ष को ज्यादा, ऐसा कई जगह, कई बार देखने को मिलता है। इस तरह देखा जाये तो अगर किसी एक पार्टी को 35 प्रतिशत ही मत मिले, परंतु संसद में सीटें ज्यादा मिलीं, तो सरकार उसी पार्टी की बनेगी।

जितने मतदाता होते हैं, वे सब-के-सब मत देने तो कभी नहीं आते। औसतन 50-60 प्रतिशत में से भी वास्तव में 20-25 प्रतिशत लोगों ने ही जिस पार्टी को वोट दिया है, आज के जनतंत्र में उसी पार्टी का राज होगा। तब भी माना यह जाता है कि यह जनतंत्र, यानी बहुमत का राज है, यद्यपि व्यवहार में अल्पमत का ही राज चलता है। चुनाव को हमने लोकतंत्र का मुख्य साधन तो बनाया, लेकिन किसी गरीब के लिये यह असंभव हो गया है कि वह चुनाव में स्वयं खड़ा हो सके या गरीब लोग मिलकर ही उसे खड़ा कर सकें। ऊपर से खड़े किये गये उम्मीदवारों में से जो जीतते हैं, वे ही जनता के प्रतिनिधि माने जाते हैं।

मौजूदा लोकतंत्र के ऐसे कई बड़े और महत्वपूर्ण दोष हैं। वास्तव में जरा बारीकी से देखें तो आज न जनता का राज है, न ही बहुमत का राज है। वस्तुत: अंत में चंद लोगों के हाथ में ही सता का केन्द्रीकरण हो जाता है और फिर वह अफसरों का ही राज बन जाता है। इस तरह, अभी सही मायने में जनता का राज तो कोसों दूर है। 'आज तक जिस रास्ते चलते आये हैं, उसी रास्ते पर आंख मूंदकर चलते रहो' – यह सोचने का कोई वैज्ञानिक तरीका नहीं है। इससे तो जनता का राज कभी आने वाला नहीं है।

जनता का राज कैसे?

जनता का राज लाना है तो नीचे से ही स्वराज्य का विकास करना होगा। छोटे-छोटे समुदायों को भीतर से ही अधिक-से-अधिक अधिकार और शक्ति प्राप्त हो और कम-से-कम अधिकार ऊपरवालों के पास रहें। उतने ही, जिनते अनिवार्य हों। जीवन के मुख्य सवालों का हल इन छोटे समुदायों के बीच ही, उनके अपने ढंग से हो। जनता जैसे-जैसे अपना काम संभालती जायेगी, वैसे-वैसे जनता का राज आयेगा। लोकतांत्रिक दृष्टि से विचार करने पर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि तंत्र जितना हल्का और सरल होगा उतनी ही लोकशाही सरल और सफल सिद्ध होगी- यदि तंत्र बोझिल और जटिल होगा तो लोकशाही भी उतने अंशों में निष्फल सिद्ध होगी।

जहां केन्द्रित संचालन आया, वहां जनता का संचालन मर गया समझिये। जनता के द्वारा संचालन कराना हो तो वह विकेन्द्रित तरीके से ही संभव होगा और मैं ऐसा मानता हूं कि लोकशाही का बचाव भी इसी में है। यदि हमें आज के औपचारिक लोकतंत्र से संतोष न हो,

शेष पृष्ठ 19 पर...

भाईचारे में गिरावट: सर्वोदय सिद्धांतों से विचलन

गौरांग चंद्र महापात्र, महामंत्री, सर्व सेवा संघ

सर्वोदय, जिसका अर्थ है "सभी का कल्याण", महात्मा गांधी के दर्शन में निहित एक गहन अवधारणा है। यह सार्वभौमिक भाईचारे और समग्र रूप से समाज के उत्थान के विचार पर जोर देता है। हालाँकि, हाल के दिनों में, सर्वोदय के सिद्धांतों से हटकर भाईचारे में उल्लेखनीय गिरावट आई है। यह लेख इस गिरावट में योगदान देने वाले कारकों और हमारे समुदायों के लिए इसके परिणामों का पता लगता है।

सर्वोदय के मूलभूत सिद्धांतों में से एक दूसरों के लिए करुणा और सहानुभूति है। हालाँकि, आधुनिक समाज में सहानुभूति में गिरावट देखी जा रही है। बढ़ती हुई व्यक्तिवादिता और आत्म-केंद्रितता ने दूसरों की भलाई के लिए कम चिंता पैदा की है। सहानुभूति का यह क्षरण विभाजन पैदा करता है और भाईचारे के बंधन को कमजोर करता है जिसे सर्वोदय बढ़ावा देना चाहता है। ध्रुवीकरण का उदय; आज की दुनिया में ध्रुवीकरण तेजी से प्रचलित हो गया है, जिससे व्यक्तियों और समुदायों के बीच गहरी खाई पैदा हो रही है। संवाद और समझ को बढ़ावा देने के बजाय, लोग कठोर राय बनाने और मतभेद रखने वालों को विरोधी मानने के लिए अधिक इच्छुक हो रहे हैं। यह बढ़ता ध्रुवीकरण सर्वोदय द्वारा परिकल्पित भाईचारे और सहयोग की भावना को बाधित करता है।

सर्वोदय के सिद्धांत सादगी और मितव्ययिता के महत्व पर जोर देते हैं, यह मानते हुए कि अत्यधिक भौतिकवाद असंतोष पैदा कर सकता है और सामाजिक सद्भाव को बाधित कर सकता है। हालाँकि, समकालीन समाज का उपभोक्तावाद और धन की निरंतर खोज पर जोर देने से प्राथमिकताएँ सभी के कल्याण से दूर हो गई हैं। भौतिकवाद की यह संस्कृति असमानता को बढ़ावा देती है और सच्चे भाईचारे की स्थापना में बाधा डालती है।

आधुनिक युग में, तेजी से शहरीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने समुदायों की गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। सामाजिक संपर्क और सामंजस्य के पारंपरिक रूपों को आभासी संबंधों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है, जिससे विखंडित समुदाय बन गए हैं। भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए ज़रूरी अपनेपन और एकजुटता की भावना अक्सर इस खंडित परिदृश्य में खो जाती है।

राजनीतिक ताकतें अक्सर अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए सामाजिक दोष रेखाओं का फायदा उठाती हैं, जिससे समुदायों का विखंडन होता है। विभाजनकारी बयानबाजी, पहचान की राजनीति और सामाजिक और आर्थिक असमानताओं का हेरफेर भाईचारे के ताने-बाने को नष्ट कर देता है। आम कल्याण के लिए लोगों को एकजुट करने के बजाय, ये रणनीति संघर्ष को बढ़ावा देती है और कलह के बीज बोती है।

भाईचारे के बिगड़ने के दूरगामी परिणाम होते हैं। यह सामाजिक प्रगति में बाधा डालता है, संकट के समय लचीलापन कमज़ोर करता है और असमानताओं को कायम रखता है। सर्वोदय की भावना को बहाल करने और भाईचारे को फिर से जीवंत करने के लिए, ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। इन प्रयासों को सहानुभूति और करुणा को बढ़ावा देने, समावेशी संवाद को बढ़ावा देने, भौतिकवाद का मुकाबला करने और एकजुट समुदायों के पुनर्निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

सर्वोदय के सिद्धांतों का प्रसार करने और भाईचारे की संस्कृति को बढ़ावा देने में शिक्षा और जागरूकता अभियान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। समुदाय द्वारा संचालित पहल, अंतरधार्मिक संवाद और सहयोगात्मक समस्या-समाधान दृष्टिकोण विश्वास और एकजुटता के बंधनों को फिर से बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। सारे मार्ग खुले है, भाईचारा के संरक्षण, प्रोत्साहन एवं जागरुकता फैलाने के सारे मार्ग खुले है लेकिन जब स्वार्थ, मोह एवं महत्त्वाकांक्षा का नशा हावी हो जाता है तो उसे अवश्य छोड़ना चाहिए।

सर्वोदय सिद्धांतों से भाईचारे का ह्रास समकालीन समाज में एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। एक सामंजस्यपूर्ण और समावेशी दुनिया बनाने के लिए सहानुभूति, करूणा और सभी के कल्याण के मूल मूल्यों के साथ फिर से जुड़ना आवश्यक है। भाईचारे के ह्रास में योगदान देने वाले कारकों को पहचानकर, हम इस प्रवृत्ति को उलटने और सर्वोदय की भावना को बनाए रखने वाले समाजों का निर्माण करने के लिए सक्रिय कदम उठा सकते हैं।

हम सब सर्वोदय विचार धारा के लोग इस पर चिंतन और मनन करें तो कल एक नए समाज की रचना प्रारंभ हो सकती है।

जय जगत।

गतिविधियां

सोनम वांगचुक - लद्दाख से उठी हिमालय की आवाज

गांधी जनों ने बनारस राजघाट के सत्याग्रह स्थल से लद्दाख के आंदोलन को समर्थन दिया है और गांधी संस्थाओ के नेतृत्व कर्ता साथी दिल्ली में उन्हें मिलने गए।

लद्दाख से एक सितंबर को शुरु हुई 1000 किमी. की पैदल और यदा-कदा वाहन यात्रा करके दिल्ली की सीमा पर पहुंचे एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक को उनके 150 साथियों के साथ हिरासत में ले लिया गया है। लद्दाख को 'छठी अनुसूची' में शामिल करने की मांग के साथ सोनम वांगचुक ने लद्दाख से यह यात्रा शुरू की थी। उन्हें एक अक्टूबर को राजधानी के सिंघु बार्डर से हिरासत में लिया गया। पुलिस का कहना है कि शहर में निषेधाज्ञा लागू होने के कारण सोनम और उनके साथियों को रोका गया, लेकिन जब वे नहीं रुके तो उन्हें हिरासत में ले लिया गया। सोनम जी के नेतृत्व में यह टोली हिमालय के दर्द बांटते हुए उसके संरक्षण का संदेश लेकर 2 अक्टूबर, 'गांधी जयन्ती' के दिन दिल्ली के राजघाट (गांधी समाधि) पंहुचने की उम्मीद रखते थे।

बरसों से पदयात्रा भारत में जनहित, आध्यात्मिक संदेश पंहुचाने और समाज को जगाने का सशक्त माध्यम रहा है। सोनम जी की यात्रा को मार्ग में जगह-जगह मिला समर्थन साबित कर रहा है कि पदयात्रा आज भी शुद्ध जनहित और आध्यात्मिक संदेश फ़ैलाने का सशक्त माध्यम है, जिसकी प्रासंगिकता असंदिग्ध है, बशर्ते यात्रा का लक्ष्य स्वार्थ-जनित न हो। हिमाचल और गढ़वाल की 'हिमालय बचाओ संपर्क वाहन यात्रा' के दौरान भी सवाल उठे थे कि 'जब हिमालय तुम्हें बचा रहा है तो तुम हिमालय को बचाने वाले कौन होते हो,' तो जवाब होता था कि हिमालय की हमें बचाने की शक्ति हमारी गलत विकास की गतिविधियों और हमारे लालच के कारण अति-दोहन के चलते नष्ट हो रही है।

हिमालय को बचाने का अर्थ है, हिमालय की वायु को शुद्ध करने की शक्ति, जल-संरक्षण की शक्ति, जलवायु

शेष पृष्ठ 8 पर...

जन्मशताब्दी पर विशेष

सर्वोदय के अनन्य साधक राधाकृष्ण

चंदन पाल, अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ

संक्षिप्त परिचय

दुनिया में बहुत कम लोग बहुमुखी प्रतिभा के साथ पैदा होते हैं। ऐसे ही एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे राधाकृष्णजी (कर्ममादाकला श्रीनिवासचारलु राधाकृष्ण - संक्षेप में के. एस. राधाकृष्ण), जिन्हें कई लोग प्यार से 'नैना' कहते थे। राधाकृष्णजी का जन्म 12 अक्टूबर, 1924 को मैसूर राज्य के चित्रदुर्ग जिले के सिद्धबनहल्ली में हुआ था। पिता श्री के.एस.अचारलु. अचारालुजी एक प्रख्यात शिक्षाविद् थे। इस लिहाज से वर्ष 2024 राधाकृष्णजी की जन्मशताब्दी है।

शुरू में टुंकुर और बैंगलोर में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू) गए। बी.एच.यू. से रसायन विज्ञान में स्नातोकोत्तर किया। बी.एच.यू. में प्रवेश के पीछे एक इतिहास है। पंडित मदन मोहन मालवीय बी.एच.यू के संस्थापक थे। 1939 में जब अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद् डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन (जो बाद में देश के राष्ट्रपति पद को सुशोभित किए) को बी.एच.यू. के कुलपति का पद संभालने के लिए बुलाया गया तो उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। डॉ. एस. राधाकृष्णन भी मैसूर में राधाकृष्णजी के परिवार के पड़ोसी के रूप में रहते थे। राधाकृष्णजी की विलक्षण प्रतिभा ने डॉ.एस.राधाकृष्णन को प्रभावित किया। इसीलिए उन्होंने राधाकृष्णजी के परिवार को उच्च शिक्षा के लिए बी.एच.यू. में प्रवेश लेने की सलाह दी। उस दृष्टि से राधाकृष्णजी का बनारस से नाता बहुत पुराना था।

गांधी दर्शन के प्रति आकर्षण

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ देश की कई स्थापित औद्योगिक कंपनियों में नौकरी का प्रस्ताव आया था। लेकिन राधाकृष्णजी की सोच में आमूल-चूल परिवर्तन उस समय तक आ गया था। खासकर महात्मा गांधी का युवाओं से राष्ट्र निर्माण के काम में आगे आने का जोरदार आह्वान को लेकर, राधाकृष्णजी ने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया था कि उनकी भावी यात्रा का उद्देश्य क्या होगा। 23 साल की उम्र में, 1947 में, वह गांधीजी द्वारा स्थापित सेवाग्राम आश्रम के लिए ट्रेन में बैंगलोर से रवाना हुए। वर्धा आकर पहली मुलाकात गांधीजी के अर्थशास्त्र को आकार देनेवाले जे. सी. कुमारप्पा के साथ मिले। वर्धा के मगनवाड़ी में रहने के दौरान, राधाकृष्णजी ने देश-विदेश के कई गांधी अनुयायियों से मुलाकात की। मगनवाड़ी से सेवाग्राम आश्रम पहुंचने पर शिक्षाविद् दम्पति आशादेवी आर्यनायकम और ई.आर.डब्ल्यू. आर्यनायकम ने राधाकृष्णजी का पुत्र के रूप में स्वागत किया। आर्यनायकम गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शांतिनिकेतन के शिक्षा विभाग के प्रभारी थे, गांधीजी के विशेष अनुरोध पर रवीन्द्रनाथ नई शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए उनके अनुरोध को ठुकरा नहीं सके। नई तालीम के प्रभारी आर्यनायकम दंपत्ति की रत्न को पहचानने में देर नहीं हुई। उन्होंने राधाकृष्णजी को नई तालीम का प्रथम प्राचार्य नियुक्त किया।

राधाकृष्ण के माता-पिता उनके आश्रमवासी होने से चिंतित थे। और उन्होंने उनकी जल्दी शादी करने की व्यवस्था की।

1948 में राधाकृष्णजी का विवाह बी.कमला से हुआ। लेकिन इससे राधाकृष्ण अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। बल्कि दोनों पति-पत्नी ने गांधीजी के सर्वोदय दर्शन, सत्याग्रह और रचनात्मक कार्यो के प्रचार-प्रसार के लिए खुद को समर्पित कर दिया। स्वतंत्रता के बाद के भारत में ग्रामस्वराज के लक्ष्य में राधाकृष्णजी का योगदान अद्वितीय है और कमला अम्मा ने उन्हें उचित सहयोग दिया। सेवाग्राम, वाराणसी, दिल्ली से एक भ्रमणशील परिवार के रूप में राधाकृष्णजी ने सर्वोदय के कार्य को नई ऊंचाई पर पहुंचाया।

प्रमुख गांधी संगठनो के साथ जुडाव

- प्राचार्य, नई तालीम समिति – 1947-1952
- मंत्री, हिन्दुस्तानी तालीम संघ – 1952-1961
- सर्वोदय भूदान-ग्रामदान आंदोलन - 1960
- मंत्री, सर्व सेवा संघ – 31/11/1962 – 22/04/1969
- मंत्री, गांधी शांति प्रतिष्ठान – 1969-1990
- अध्यक्ष, गांधी शांति केन्द्र (Gandhi Peace Centre) – 1979-1994

सर्व सेवा संघ या सर्वोदय आंदोलन में राधाकृष्ण

राधाकृष्ण एक युवा, कुशल सर्वोदय कार्यकर्ता, सेवाग्राम में नई तालीम के काम में लगे रहने के दौरान, भूदान आंदोलन के संस्थापक, भूदान आंदोलन के प्रणेता, आचार्य विनोबा भावे के ध्यान में आए। गांधीजी की हत्या के तुरंत बाद 13-15 मार्च, 1948 को गांधी अनुगामी नेताओं ने सेवाग्राम में एकत्र हुए। गांधीजी की कार्य योजना को क्रियान्वित करने के लिए गांधीजी के कार्य से जुड़े अनेक संगठनों को एक साथ एक छतरी के नीचे कार्य करने का निर्णय लिया गया। परिणामस्वरूप 'अखिल भारत सर्व सेवा संघ' और 'सर्वोदय समाज' का गठन हुआ। हरिजन सेवक संघ और कस्तूरबा मेमोरियल ट्रस्ट को इससे बाहर रखा गया है।

राधाकृष्णजी ने विनोबाजी के नेतृत्व में 1951 से शुरू हुए भूदान आंदोलन और बाद में ग्रामदान आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। 70 के दशक में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में आयोजित संपूर्ण क्रांति आंदोलन में भी राधाकृष्णजी ने विशेष भूमिका निभाई। इसीलिए आपातकाल के दौरान राधाकृष्णजी को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

के. एस. राधाकृष्ण (1924-1994)

सन 1960, 1961 में और बाद में 1970 में बिनोबाजी की प्रेरणा से सर्वोदय के कार्य का देश-विदेश में प्रचार के लिए डॉ. राजेंद्र प्रसाद, श्री लालबहादुर शास्त्री, बाबू जगजीवन राम के प्रोत्साहन और सहयोग से उत्तर प्रदेश के वाराणसी के अंतर्गत वरुणा और गंगा नदियों के संगम पर उत्तर रेलवे से 12.89 एकड़ भूमि खरीदी गई और अखिल भारत सर्व सेवा संघ साधना केन्द्र की स्थापना की गई थी। यहाँ से गांधी-विनोबा-जयप्रकाशजी द्वारा लिखित साहित्य, सर्वोदय तथा अन्य सत साहित्य के प्रकाशन एवं वितरण की व्यवस्था किया गया था, सर्व सेवा संघ के इस कार्य को गति देने के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति के रूप में विनोबाजी की पहली पसंद राधाकृष्णजी को 1962 में सर्व सेवा संघ के मंत्री का दायित्व सौंपकर बनारस भेजा गया।

राधाकृष्ण पूरे परिवार (पत्नी-कमला, पुत्र-चंद्रहास, पुत्री-सोभाना) के साथ बनारस के लिए रवाना हुए। लगभग 7 वर्षों तक सर्व सेवा संघ के मंत्री पद पर बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सेवा की। उस समय सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी थे। सर्व सेवा संघ की भूमि पर जयप्रकाशजी के नेतृत्व में स्थापित गांधी विद्या संस्थान (Gandhian Institute of Studies) उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के सहयोग से 30 वर्षों के लिए एक एम.ओ.यू. के आधार पर बनाया गया था। पूरे देश से छात्र-छात्राएं गांधीजी के आदर्शों और गतिविधियों पर अध्ययन, शोध आदि के लिए आते थे। ब्रिटिश अर्थशास्त्री

ई.एफ.शूमाखर ने यहीं बैठकर अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'स्मॉल इज़ ब्यूटीफुल' लिखी थी। राधाकृष्णजी इस संस्थान के बोर्ड के सदस्य थे और संस्थान की सभी गतिविधियों में बहुत सक्रिय रूप से शामिल थे। इसी दायरे में रहे कई दूसरे प्रो. सुगत दासगुप्ता, प्रो. अमलान दत्ता, डॉ. बी.बी. चटर्जी, डॉ. बी.एन. जुएल, प्रबोध चोव्स्की, प्रो. रनन भट्टाचार्य, डॉ. जीआरएसवी राव, प्रो. दिवाकर, प्रो. कमालुद्दीन, डॉ. रामजी सिंह आदि यहां पढ़ाते थे। शायद सर्वोदय नेतृत्व में से कोई भी ऐसा नहीं होगा जो सर्व सेवा संघ के साधना केंद्र में नहीं आया होगा। जो आकर रहे है उनमें से - आचार्य विनोबा भावे, दादा धर्माधिकारी, यू.एन. ढेबर, धीरेन मजूमदार, जयप्रकाश नारायण, प्रभावती देवी, अच्युत पटवर्धन, श्रीमन्नारायण, मदालशा बहन, अन्ना साहब सहस्रबुद्धे, दत्ताबा दास्ताने, धत्रेजी, मणिमाला बहन, शंकरराव देव, जे.बी. कृपलानी, सुचेता कृपलानी, डॉ.सुशीला नैय्यर, प्यारेलाल नैय्यर, बिमला ठक्कर, नबकृष्ण चौधरी, रमा देवी, मनमोहन चौधरी, कृष्णा मोहंती, महेंद्र भाई, क्षितीश रॉय चौधरी, बिमल चंद्र पाल, राधाकृष्ण बजाज, करण भाई, प्रेम भाई, रागिनी प्रेम, ओम प्रकाश तिर्का, सोम भाई, प्रभाकरजी, अरुणाचलमजी, राधाकृष्ण मेनन, सिद्धराज धड्डा, पूर्ण चंद्र जैन, जगन्नाथनजी, गोराजी, लवनम, विजयम, सरस्वती बहन, हेमलता, आचार्य राममूर्ति, के.एस. अचरलू, मार्जोरी साइक्स, बाल विजय भाई, महादेवी ताई, निर्मला देशपांडे, तारा बहन, कनकमल गांधी, जस बहन, गोविंदराव देशपांडे, नारायण देसाई, उत्तरा बहन, हरिबल्लव पारिख, बीबी अमतुस सलाम, मृदुला साराभाई, हेम्रप्रभा बैदेव, अमलप्रभा बैदेव, डॉ.आराम, गौरा बहन, राधा भट्ट, एस.एन. सुब्बाराव, कृष्णराज मेहता, उषा बहन, देवेन्द्र गुप्ता, विकास भाई, मनबेन्द्र नाथ मंडल, आत्मप्रभा बहन, विनय भाई, पारश भाई, अमरनाथ भाई, रामचन्द्र राही, भगवान बजाज, अविनाश भाई, ठाकुरदास वंग, चुनिलाल वैद्य, जगदीश शाह, रामचन्द्र भार्गव, पी. एम. त्रिपाठी, नटवर ठक्कर, एन. कृष्णस्वामी, शैलेश कुमार बंदोपाध्याय, निर्मल चन्द्र, हेमदेव शर्मा, राम प्रवेश शास्त्री, पंच देव तिवारी, कृष्ण चन्द्र सहाय और कई अन्य सर्वोदय कार्यकर्ता रहे।

आज की स्थिति एवं राधाकृष्ण के अनुयायियों की भूमिका

एक ऐतिहासिक, विरासत स्थल जहां से गांधी विचार, सर्वोदय विचार का प्रचार होता था। इस जगह पर 22 जुलाई 2023 को बिना किसी अदालती आदेश से सरकार द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर लिया गया, और 12 अगस्त, 2023 को इसपर बुलडोज़र चलाकर ध्वस्त कर दिया। दूसरी ओर, जिस हिस्से में गांधी विद्या संस्थान (Gandhian Institute of Studies) था उसको अन्याय पूर्ण तरीके से दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय

(1992 में आयोजित एक प्रशिशक्षण शिविर में राधाकृष्णजी के साथ चन्दन पाल)

कला केंद्र (IGNCA) को दे दिया गया।

कुछ समय से यह झूठ फैलाया जा रहा है कि सर्व सेवा संघ का उक्त स्थान नार्दन रेलवे विभाग का है जिसे सर्व सेवा संघ को लीज पर दिया गया। यह झूठ, दुष्प्रचार और लोगों को गुमराह करने की कोशिश से भरा है। तथ्य यह है कि उक्त जमीन 1960, 1961 और 1970 में अखिल भारत सर्व सेवा संघ के नाम से खरीदी गई थी, न कि लीज पर।

इस अन्याय के विरोध में सर्व सेवा संघ ने पिछले एक वर्ष में विभिन्न कार्यक्रम करते आ रहा हैं। फिलहाल उस स्थान के पास 100 दिन का लंबा सत्याग्रह चल रहा है। लेकिन यह बहुत दुखद है कि राधाकृष्णजी के कुछ प्रशंसक IGNCA का विरोध करने के बजाय उस संगठन से सहयोग ले रहे है। याद रहे यही सर्व सेवा संघ और गांधी विद्या संस्थान को राधाकृष्णजी ने ऊंचाई पर पहुंचाया था, जो लोग ये काम किया वह लोग अपने नैतिकता को पहले झांक कर देखे।

गांधीवादी विचार को आगे बढ़ाने में अन्य योगदान

जहां-जहां राधाकृष्ण ने हाथ लगाया, वहां-वहां सोना प्रकट हो गया। राधाकृष्णजी के लगभग पाँच दशकों के सामाजिक कार्यो के काल को स्वर्ण युग कहा जा सकता है। 1969 में महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी के दौरान, संगठन के अध्यक्ष डॉ. आर.आर.दिवाकर राधाकृष्णजी को चाहते थे। दिवाकरजी ने विनोबाजी से दो बार प्रार्थना की, असफल रहे। लेकिन उन्होंने उम्मीद न छोड़ते हुए तीसरी बार कोशिश की और सफल हुए। 1969 से 1990 तक 21 वर्षो में राधाकृष्णजी गांधी शांति प्रतिष्ठान के सचिव के रूप में संगठन को शिखर पर पहुंचाया। विनोबाजी, दिवाकर जी की तरह जयप्रकाश जी को भी राधाकृष्ण जी पर पूरा विश्वास और भरोसा था। न केवल गांधीयन इंस्टिट्यूट ऑफ़ स्टडीज के मामले में बल्कि कश्मीर मामले में शेख अब्दुल्ला को जब कोडाइकनाल जेल में लंबे समय तक हिरासत में रखा गया था उस समय जयप्रकाशजी ने भारत सरकार को इस बारे में मध्यस्थता करने के लिये पत्र लिखा। सरकार इसपर राजी होने के कारण जयप्रकाशजी ने राधाकृष्ण और नारायण देसाई को जेल में जाकर शेख अब्दुल्ला से बात करने के लिए भेजा। उस साक्षात्कार की पूरी रिपोर्ट राधाकृष्णजी ने ट्रेन से लौटते समय तैयार की थी। उस रिपोर्ट के आधार पर शेख अब्दुल्ला को जेल से रिहा कर दिया गया। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानवाधिकार, लोकतांत्रिक व्यवस्था पर कोई भी हमला होने पर राधाकृष्णजी कभी चुप नहीं रहते थे। उन्होंने सरकार की अन्यायपूर्ण नीतियों और कार्यो के खिलाफ हमेशा बोलते थे।

1971 में, बांग्लादेश मुक्ति युद्ध आंदोलन के दौरान, बांग्लादेश का मुद्दा पहली बार जयप्रकाशजी के द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के माध्यम से दुनिया के सामने सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया गया था। लेकिन इन सबके पीछे राधाकृष्णजी का योगदान सबसे प्रमुख था। इसके बाद जब लाखों-लाखों शरणार्थी भारत में आये और उनकी राहत एवं पुनर्वास का कार्य राधाकृष्णजी ने किया। मैं स्वयं इसका अन्यतम गवाह हूं।

1964 में जयप्रकाशजी ने, राधाकृष्णजी, नारायण भाई और डॉ. आरम्भ के नेतृत्व में नागालैंड शांति मिशन का गठन किया गया। सर्व सेवा संघ के मंत्री रहते समय

राधाकृष्णजी, विनोबाजी और जयप्रकाशजी के शांति सेना के काम को विस्तारित करने में नारायण भाई के साथ मिलकर आगे बढ़ाया।

1979 में, राधाकृष्णजी ने भावी पीढ़ी के निर्माण के उद्देश्य से लोकशक्ति का निर्माण और पंचायत राज को मजबूत करके ग्रामस्वराज के दृष्टि में काम करने के लिए गांधी शांति केंद्र की स्थापना करके ग्राम आत्मनिर्भरता का काम शुरू किया। वह अपनी मृत्यु (1994) तक इस कार्य से जुड़े रहे। उनके द्वारा बनाये गये युवाओं के समूह आज भी गांधीजी के आदर्शों को ध्यान में रखकर और राधाकृष्णजी के दिखाये रास्ते पर चलते हुए उनमें से कई आज अपने-अपने क्षेत्र में स्थापित हैं। हालाँकि गांधी शांति केंद्र आज उस रूप में मौजूद नहीं है, लेकिन 80 और 90 के दशक के युवा तुर्कों की कृतियों में उनके प्रिय 'नैना' राधाकृष्णजी आज भी जीवित हैं।

राधाकृष्णजी के साथ काम करने का एहसास

राधाकृष्णजी से मेरी पहली मुलाकात 1968 में कोलकाता के गांधी शांति प्रतिष्ठान कार्यालय में हुई थी। उस समय नक्सली आंदोलन बहुत तीव्र था। उसी सिलसिले में शहर के अलग-अलग इलाकों में शांति मार्च चल रहा था। नक्सली नेताओं से चर्चा करने के लिए जयप्रकाशजी और राधाकृष्णजी मेरे कार्यालय आए। तब से मुझे कई बार नैना की छत्रछाया में कई विषय में काम करने का मौका मिला। और उसके कारण मुझे उन्हें बहुत करीब से जानने और समझने का अवसर मिला। मैंने उन्हें रचनात्मक, कुशल संगठक और असाधारण विश्लेषणात्मक शक्तियों से युक्त पाया। उनकी कुशल गहरी दूरदर्शिता, सोचने का तरीका और कार्य करने का तरीका दूसरों से बहुत अलग था। राधाकृष्णजी बहुत ही खुले दिल के दयालु, स्नेहशील, विनम्र और उदार व्यक्ति थे। उनके विचारों और कार्यों में कोई संकीर्णता नहीं थी। जीवन भर विभिन्न चुनौतियों का सामना करने पर भी वे कभी पीछे नहीं हटे, नेतृत्व पद पर बैठने का अवसर बार-बार उनके सामने आया तो भी गांधीजी के विचार आदर्शों और कार्यों से विचलित नहीं हुए। कई आन्दोलनों के कारण कई राजनैतिक दलों के साथ उनका संपर्क अच्छा रहा। सभी दलों ने राधाकृष्णजी को बहुत मर्यादा के साथ देखते थे। लेकिन उन्होंने किसी राजनीतिक दल का हिस्सा नहीं बने। उनका दर्शन गांधीवादी आदर्शों के आधार पर मानव कल्याण के लिए काम करना था। उन्हें युवा समाज पर अगाध आस्था और विश्वास था। उनके जीवन में संकीर्ण मानसिकता को कभी स्थान नहीं दिया। कई बार उनका मजाक बेहद गंभीर और जटिल स्थितियों को भी हल्का कर देता था। 70 साल की उम्र में भी उनका मन यौवन से भरा हुआ था। दिसंबर के मध्य रात में हाड़ कंपा देनेवाली सर्दी के बीच किसी बैठक के अंत में कोई कह सकता हैं, 'चलो आइसक्रीम खायेंगे।' आखिर तक हुआ भी था। यहीं है हमारे नैना।

1994 में हम लोगों से हमेशा के लिए अलग होने के बाद कोई खास कार्यक्रम के समय जैसा कि 1999 में पाराद्वीप क्षेत्र में सुपर साइक्लोन के दौरान 2004 में अंडमान निकोबार और अन्य जगहों पर सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में ऑपरेशन के दौरान या 2012 से 2017 तक कोकराझार, असम में बोडो और मुस्लिम दंगाग्रस्त क्षेत्रों में शांति अभियानों के दौरान बार-बार नैना को याद आता था। याद किया गया ऐसे अद्भुत व्यक्ति की जन्मशताब्दी पर मैं उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

स्रोतः-

(1) सर्व सेवा संघ संविधान

(2) Mahatma Gandhi's Vision
Radhakrishna's Action

बाढ़ पीड़ितों में राहत सामग्री का वितरण

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है। प्रभावित क्षेत्रों में बाढ़ दिन-प्रतिदिन के कार्यों को प्रभावित करती है। क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए विभिन्न समस्याएं पैदा करती है। प्रभावित क्षेत्रों में जन जीवन के पुनः निर्माण करने में महीनों लगते हैं।

इस आपदा के दुःखद समय बा बापू सेवा ट्रस्ट, भागलपुर की प्रमुख न्यासी डॉ. सुजाता चौधरी के द्वारा आपदा ग्रस्त महिलाओं के लिए वस्त्र वितरण एवम सैनिटरी नैपकिन वितरण का विस्तृत आयोजन किया गया। लगभग पांच सौ महिलाओं ने इसमें अपनी भागीदारी प्रदर्शित की और इस का भरपूर लाभ उठाया।

आभार

बा बापू सेवा ट्रस्ट, भागलपुर ने सर्व सेवा संघ, वाराणसी को आर्थिक सहायता प्रदान की है।

Scan to Join WhatsApp Channel of Sarva Seva Sangh

or click here

सोनम वांगचुक - लद्दाख से उठी हिमालय की...

नियंत्रण की शक्ति, जैव-विविधता द्वारा देश की सेवा करने की शक्ति, थके-हारे मानस को शांति प्रदान करने की शक्ति, सदानीरा नदी-तन्त्र द्वारा सेवा करने की शक्ति को लालच के लिए नुकसान पंहुचाने से बचाना और नुकसान पंहुचाने वालों को रोकना ही हिमालय को बचाना है।

हिमालय के जो प्राकृतिक और सांस्कृतिक अवदान हैं उनको बचाना सोनम वांगचुक और उनके साथियों की इस यात्रा का मूल उद्देश्य है। हिमालय सांस्कृतिक विविधता का भी भंडार है। किसी भी समाज के दीर्घकालिक हित के लिए सांस्कृतिक विविधता बहुत आवश्यक तत्व है। हिमालय में यदि बर्फ न रहे तो हिमालय का क्या अर्थ रह जाएगा। किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में वहां के समाजों का होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

मनुष्य समाज और प्रकृति-तन्त्र का संतुलित रिश्ता ही पारिस्थितिकीय संतुलन का आधार है। हमारा आज का विकास का मॉडल इस तत्व की अनदेखी कर रहा है। हम सोचने लगे हैं कि सभी समस्याओं के समाधान इंजीनियरिंग और तकनीकी से मिल सकते हैं, किन्तु ऐसा है नहीं। हम पानी का एक कतरा, हवा का एक श्वास, मिट्टी का एक ढेला, प्रकृति के तत्वों का प्रयोग किए बिना बना नहीं सकते। जिन्दा रहने के लिए हवा, पानी और भोजन ही सबसे बुनियादी जरूरतें हैं।

हमारा विकास इन्हीं पर आघात कर रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जिससे नदियों के अस्तित्व पर खतरा आ गया है। वे मौसमी होकर रह जाएंगी। मिट्टी हमारी रासायनिक खेती की पद्धति द्वारा जहरीली होती जा रही है, वही जहर हमारे खाद्य पदार्थों में पंहुच रहे हैं। हवा को सभ्यता का धुआं जहरीला कर रहा है। तो संकट जिन्दा रहने पर आने वाला है। सबसे संवेदनशील परिस्थिति-तन्त्र होने के नाते हिमालय पर होने वाले दुष्प्रभाव अधिक घातक होंगे और पूरे देश को प्रभावित करेंगे।

लोग अब इन मुद्दों को समझने लगे हैं इसीलिए लद्दाख की आवाज को हिमाचल और उत्तराखंड में इतना समर्थन मिल रहा है। असल में यह आवाज पूरे हिमालय की है। मुख्यधारा के विकास मॉडल से यहाँ जो परिस्थिति-तंत्र को नुक्सान हो रहा है उसकी और अधिक अनदेखी पूरे देश के लिए घातक सिद्ध होगी। हिमालय बचा रहेगा तो पूरा देश बचा रहेगा। हिमालय के लोगों की विकास की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें...

साभार - सर्वोदय प्रेस सर्विस

विस्तार में पढ़ने के लिए यहाँ क्लिक करें

जेपी आन्दोलन के सबक

पंकज, बेतिया

बिहार आंदोलन जिसे छात्र आंदोलन, 1974 आंदोलन और जेपी आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, के पचास वर्ष गुजर गए। उस आंदोलन में शामिल छात्र-युवा आज 65-70 के पार हो चुके हैं। उस दौर में अनेक स्वतंत्रता सेनानी भी शामिल थे। आंदोलन के नेता जयप्रकाश नारायण स्वयं एक जांबाज स्वतंत्रता सेनानी थे। हालांकि इसके लिए उन्होंने सरकार द्वारा दी जाने वाली पेंषन राशि ठुकरा दी थी।

देश के सामाजिक राजनीतिक स्थिति पर पूर्व के आंदोलनों की तरह जेपी आंदोलन का भी प्रभाव पड़ा। हम यहां उस आंदोलन की सीख, उनके सबक पर विचार करेंगे।

जिनके खिलाफ हैं उनसे भी नफरत नहीं

जून 1974 की एक तारीख। कदमकुआँ स्थित महिला चर्खा समिति यानी जेपी के किराये के आवास के प्रांगण में युवा छात्र-नेताओं की भीड़ जुटी थी और कांग्रेसी सरकार के खिलाफ उनका आक्रोष बलबला रहा था। अचानक उनमें से कुछ छात्र नेताओं ने नारे लगाए - श्सच कहना अगर बगावत है, तो समझो हम भी बागी हैं, इंदिरा गाँधी मुर्दाबाद ! मुर्दाबाद !!

अचानक ऊपरी मंजिल की एक खिड़की धड़ाके के साथ खुली और जेपी का आक्रोष से तमतमाया चेहरा दिखा - किसने लगाया यह मुर्दाबाद का नारा ! किसने लगाया ! वह चीखते हुए चरखा समिति की संकरी सीढ़ियों से खटाखट नीचे उतरे और आक्रोष भरे लहजे में पूछा - कौन है ? किसने लगाया यह मुर्दाबाद का नारा ? क्रांति जिंदा लोग किया करते है। मुर्दाबाद-मुर्दाबाद करने वाले लोग जिंदा क्रांति नहीं कर सकते। वे गुस्से से थर-थर कांप रहे थे - क्रांतियां मुर्दाबाद कह कर नहीं की जाती। क्रांतियाँ इन्कलाब जिंदाबाद करके की जाती है। उन्होंने पूछा क्या मुर्दों के खिलाफ क्रांति होगी ? वहां उपस्थित आक्रोषित भीड़ को मानो साँप सूंघ गया। मुर्दाबाद के नारे पर विराम लगा।

इस घटना से छात्रों-युवकों को यह सबक मिली कि क्रांति मानवीय व मर्यादित बोल-व्यवहार की मांग करती है। जिनके विरुद्ध संघर्ष है उनके लिए भी मन में नफरत उचित नहीं। परिवर्तन के संघर्ष के मार्ग में नफरत का स्थान नहीं।

1977 के मार्च के अंतिम सप्ताह में जनता पार्टी की जीत व सरकार बनने के तत्काल बाद वे अकेले चुपके से इंदिरा जी के आवास पर पहुंचे। इंदिरा जी से बात हुई। भावुक जेपी की आंखों से आंसू बह निकले। उन्होंने इंदिरा जी को बदले की किसी कार्रवाई नहीं किए जाने का आष्वासन दिया। जिन इंदिरा जी ने उन्हें जेल में डाला, जेल में उनकी किडनी खराब हुई और वही जेपी बिना किसी को बताए उनसे बात करने चले गए।

जेपी ने बिहार आंदोलन में सभी का साथ लिया। नक्सली सत्यनरायण सिंह हों या मार्क्सवादी तकी रहीम। आर एस एस और जनसंघ के लोग भी जुड़े। लोकतंत्र और स्वतंत्रता के प्रति गहरी आस्था के कारण उन्होंने किसी व्यक्ति या विचार को आंदालन से छांटने का काम नहीं किया।

जब संघ परिवार और जनसंघ पर फासिस्ट होने का आरोप लगा तब उन्होंने दिल्ली में जनसंघ के एक सम्मेलन (1974 के अंत में) में कहा कि आंदोलन में शामिल होने के कारण अगर जनसंघ फासिस्ट है तो मैं भी फासिस्ट हूं। उन्हें व्यक्ति के विचार और व्यवहार में परिवर्तन का भरोसा था। पर इस भरोसे का संघ परिवार और उनसे जुड़े संगठनों ने कितना मान रखा और उनमें कितना बदलाव आया यह तो सामने है।

1974 आंदोलन की सीख है कि लोकतंत्र में आंदोलन के लिए एक मजबूत संगठन जरूरी है। हालांकि जेपी ने आंदोलन के दौरान एक निर्दलीय संगठन छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी का गठन किया। पर उसे राजनीतिक दलों के युवाओं का साथ नहीं मिला।

जेपी ने अपनी आम सभा में जनेउ तोड़ने की अपील की। हजारों युवकों ने जनेउ तोड़ दिए। पर संघ परिवार को यह अच्छा नहीं लगा। बिहार में संघ परिवार के प्रमुख ने जेपी से मिल कर समाज के सभी वर्गों का साथ लेने के लिए जनेउ तोड़ने की अपील से असहमति जताई। और फिर जनेउ तोड़ने की बात ही बंद हो गई। पर जेपी ने 1 जनवरी 1975 को गठित छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी की सदस्यता की शर्तों में जाति सूचक चिन्हों को धारण नहीं करना शामिल किया।

बिहार आंदोलन एक सामाजिक, राजनीतिक आंदोलन के तौर पर आगे बढ़ता अगर जनेउ तोड़ने की अपील और जनता सरकार जैसे कार्यक्रमों पर अमल होता। जनता सरकार के कार्यों में कमजोर वर्गों को वास की भूमि दिलाने, सीलिंग तथा भूमि के प्रगतिशील कानूनों पर अमल, मजदूर को उचित मजदूरी, बेदखली का निवारण, झगड़ों का आपसी निबटारा, छुआछूत, तिलक-दहेज, ऊंच-नीच के भेदभाव का अंत प्रमुखता के साथ शामिल थे।

पर ऐसे कार्यों के लिए राजनीतिक दल कितने गम्भीर थे। इसका अन्दाजा इसी से लग जाता है कि 700 से ज्यादा अंचलों वाले बिहार में मात्र 20-25 जनता सरकारें गठित व कार्यरत थीं। दलीय और उनके छात्र-युवा संगठनों के नेताओं में इन क्रांतिकारी कार्यक्रमों के लिए आकर्षण नहीं था। आंदोलन में शामिल राजनीतिक दल दोहरी आस्था रखते थे। एक ओर आंदोलन के कार्यक्रम थे और दूसरी ओर उनकी पार्टी के कार्यक्रम तथा आंदोलन में आए हजारों निर्दलीय छात्रों-युवकों को अपनी पाले में लाने का प्रयास। जनसंघ के लोग इनमें आगे थे। दलों के इस रवैये और जनता सरकार के गठन और उसके कार्यक्रमों की उपेक्षा से आंदोलन कमजोर हुआ।

अगर बिहार विधानसभा भंग करने की मांग पूरी हो जाती, आंदोलन का दमन नहीं होता और

12 जून 1975 को इलाहाबाद हाई कोर्ट द्वारा इंदिरा जी का चुनाव रद्द करने का फैसला ना हुआ होता या उस फैसले का आदर करते हुए वे सुप्रीम कोर्ट का अंतिम फैसला आने तक इस्तीफा दे देतीं तब आंदोलन का रुख सत्ताविरोधी न होकर सामाजिक बदलाव के कार्यक्रमों की ओर बढ़ता। पर परिस्थितियों और आंदोलन में शामिल दलों के स्वार्थ ने आंदोलन क्रांतिकारी कदमों की उपेक्षा की। इंदिरा जी ने अपनी गलतियों और हठ से एक क्रांतिकारी आंदोलन को पूर्णतः इंदिरा विरोधी बना दिया।

लोकतंत्र में जनशक्ति एवं राज्य शक्ति के सहकार का महत्व

24 मार्च 1977 को संसद के सेंट्रल हॉल में नवनिर्वाचित सांसदों को संबोधित करते हुए जेपी ने कहा - "शासन को जनता का सम्मान करना चाहिए। आगे जो काम करने हैं वह जनशक्ति एवं राज्य शक्ति दोनों को मिलकर करना है। मैं नहीं जानता कि आप (मोरारजी भाई) कब तक सता में रहेंगे किंतु आगे लोकनीति पर, लोकषक्ति पर आधारित समाज होना चाहिए। नये भारत के निर्माण में दो शक्तियां, राज्यशक्ति-राजनीति- दूसरी तरफ जनता-जनशक्ति-दोनों कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ेंगे। हाथ की हथेलियों की तरह हैं ये। जब तक दोनों जुड़े नहीं, ताली नहीं बजेगी।"

"... जनता और शासन की पार्टनरशीप है। आगे जो काम करने हैं वे जनशक्ति एवं राज्यषक्ति दोनों को मिलाकर करने हैं। इस जनशक्ति में युवा शक्ति भी है जिसे सही रास्ते ले चलना है। मैं आशा करता हूँ कि नये प्रधानमंत्री इसे ध्यान में रखेंगे।"

मोरारजी भाई की तरफ मुड़कर जयप्रकाशजी ने जैसे ही यह वाक्य कहा, उन्होंने जवाब दिया, 'कृपया आप निश्चिंत रहें। हम ऐसा ही करेंगे।' (तालियों से सेंट्रल हॉल गूंज उठा) भावावेष से रुंधे स्वर में जसप्रकाशजी ने आगे कहा - "... मैं आप से कुछ वर्ष छोटा ही हूं और अब ज्यादा दिन जीने वाला भी नहीं हूं। आपसे पहले ही जाऊंगा। लेकिन मुझे खुशी है कि मैं इतना बड़ा आश्वासन पाकर जा रहा हूं।"

"... भारत का भविष्य उज्जवल है और उसके लिए हम सबको कंधे से कंधा मिलाकर काम करना है।"

काश, जनता पार्टी और मोरारजी भाई देसाई ने जेपी के इस कथन का आदर किया होता।

(बिहार आंदोलन - 1974 भाग 2 से साभार)

रिपोर्ट

सत्याग्रह देश बचाने के लिए

गांधी एवं शास्त्री जयंती के अवसर पर 22वें दिन विशेष कार्यक्रम - सर्वोदय जगत का डिजिटल स्वरूप का लोकार्पण

सत्याग्रह स्थल राजघाट, वाराणसी पर महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री के जयंती पर एक जनसभा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता लोक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरजा सतीश ने किया।

प्रो. आनंद कुमार, पूर्व प्राध्यापक, जे.एन.यू. एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने कहा कि हम मानने वाले नहीं, हम झुकने वाले भी नहीं है।यह। सत्याग्रह अपने लक्ष्य को हासिल करने तक जारी रहेगा। सत्ता जब अहंकार से ग्रस्त हो जाती है तब वह न तो सत्य को सुन पाती है न ही देख पाती है। लेकिन सत्ता की इस बीमारी को जनता ठीक कर देती है और 2024 में यही खुराक दी गई। थोड़ी कसर रह गई नहीं तो बीमारी पूरी तरह ठीक हो जाती। दवा का डोज बढ़ाने की जरूरत है। सत्याग्रह ही असली दवा है। सत्याग्रही के अंदर जितना साहस होता है सत्ता में उतना ही डर होता है।

गांधी विद्या संस्थान के पूर्व प्राध्यापक एवं एन. एन. सिन्हा समाज विज्ञान संस्थान के पूर्व निदेशक डी एम दिवाकर ने कहा कि विचार किसी संस्थान, किसी बिल्डिंग का मोहताज नहीं होता। गांधी का विचार पूरी दुनिया को प्रेरित करता है। विनाश की जो कार्यवाई हुई है उसकी क्षतिपूर्ति सरकार को करनी होगी। यह सत्याग्रह भवन के लिए नहीं है देश बचाने के लिए है। आज लोकतंत्र नहीं, तंत्र का लोक है पर तानाशाही को जब लोकतंत्र का जवाब मिलता है तब वह कहीं का नहीं रहता।

महात्मा गांधी को याद करते हुए सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष चंदन पाल ने कहा कि हमारा सत्याग्रह सत्य और अहिंसा की प्रेरणा से चल रहा है परिषद के अंदर गांधी प्रतिमा पर हम माल्यार्पण करने का प्रयास करेंगे। उन्होंने उपवास पर बैठे सभी साथियों का अभिनंदन किया और कहा कि हमारे त्याग और तप का नतीजा सकारात्मक होगा। हम न्याय के लिए बैठे हैं और विश्वास है कि यह हमे हासिल होगा।

चंदन पाल ने बुलडोजर एक्शन पर सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिकाओं पर चल रही सुनवाई का हवाला देते हुए कहा की कल सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जज के पूछने पर यह स्पष्ट किया कि अपराधी सिद्ध होने पर भी मकान को, संपत्ति को ध्वस्त नहीं किया जा सकता है। कल की सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि हमें सिर्फ नगर निगम कानून के दुरुपयोग की चिंता है। यदि वह ढांचे कानून का उल्लंघन करते हैं और केवल एक को गिराया जाता है तो यह चिंता की बात है। कानून अनाधिकृत निर्माणों के लिए होना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट की स्पष्टता के बाद यह प्रमाणित हो जाता है कि सर्व सेवा संघ परिसर का ध्वस्तीकरण अवैध है। क्योंकि सर्व सेवा संघ ने यह जमीन नॉर्दर्न रेलवे से वैध तरीके से खरीदी है और नगर निगम द्वारा अनुमोदित नक्शे के अनुसार निर्माण कराया है। सर्व सेवा संघ नगर निगम को भवनों के टैक्स का भी भुगतान करती रही है।

सत्याग्रह स्थल पर आयोजित सभा को प्रेम प्रकाश यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि किसी की भी बेदखली की एक कानूनी प्रक्रिया होती है जिसका यहां पालन नहीं किया गया। सर्व सेवा संघ पर हमला नहीं है यह संविधान पर हमला है देश पर हमला है इसे किसी भी कीमत पर सहन नहीं किया जा सकता। अन्याय को सहन करना आत्मघात और पुरखों के साथ विश्वासघात होगा।

संजीव सिंह ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट में बुलडोजर एक्शन पर चल रहे मुकदमे फैसले के तुरंत बाद सर्व सेवा संघ को पुनः अपील करना चाहिए। सत्य जिसके साथ है वह कभी मिट नहीं सकता। सर्व सेवा संघ सत्य के साथ उसे कोई नहीं मिटा सकता। सरकार गांधी जी का नकली चश्मा पहने हुए हैं। एक आंख से सांप्रदायिकता देखती हैं और दूसरी आंख से तानाशाही।

विद्याधर का कहना था कि आरएसएस जनता को कंगाल और लाचार बना देना चाहती है, लोकतंत्र को समाप्त करना चाहती है। उनका दिमाग खराब है। उन्हें पता नहीं है कि गांधी की ताकत क्या है। वे आज मदहोश हैं। 2024 में इन्हें सबक मिला है पर वे सुधारने के लिए तैयार नहीं हैं। एक दिन अन्याय का अंत होगा ही। इस देश की असली लड़ाई लोकतंत्र की रक्षा का है।

अफलातून का कहना था कि विनोबा जी का जमीन मांग कर भूमिहीनों में वितरित करने का अद्भुत और क्रांतिकारी काम किया है। बोधगया में मठ के भूमि केंद्रीकरण के खिलाफ संघर्ष वाहिनी का आंदोलन चला था। नक्सलवादियों ने भी हिंसा के द्वारा जमीन के सवाल को उठाया। आरएसएस का तरीका है संपत्ति पर अनैतिक तरीके से कब्जा करो। यह केंद्र भूदान आंदोलन का कार्यालय सर्व सेवा संघ राजघाट में था। रेलवे से यहां पानी की आपूर्ति होती थी।

सभा के शुरुआत में सर्व सेवा संघ प्रकाशन के संयोजक, अशोक भारत ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह सत्य और न्याय की लड़ाई है। सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं।

धन्यवाद ज्ञापन अरविंद अंजुम ने किया। उन्होंने कहा कि मामला न्यायालय विचाराधीन होने के बावजूद जबरन कब्जा एवं ध्वस्तिकरण की कारवाई असंवैधानिक और गैरक कानूनी है।

कार्यक्रम का संचालन लोक समिति के रंजू सिंह ने किया।

महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर सत्याग्रह स्थल से सर्वोदय जगत का डिजिटल स्वरूप का लोकार्पण किया गया। नीति भाई, गिरजा सतीश, प्रो आनंद कुमार, चंदन पाल, रंजू सिंह, नंदलाल मास्टर, अशोक भारत, संजीव सिंह की उपस्थिति में यह कार्य संपन्न हुआ।

सत्याग्रह में बिहार, रोहतास के भोलानाथ सिंह, मथुरा सिंह, काशीनाथ सिंह, वशिष्ठ पासवान, रामजनम, बिक्की, सुभाष सिंह, सुरेश, विद्याधर, अनिता, मनीषा, रंजू सिंह, सोनी, रचना, पूनम, मैनब, बानो, राजकुमारी, सिस्टर फ्लोरिन आदि शामिल हुए हैं।

- स.ज. डेस्क

रिपोर्ट

झारखंड जनाधिकार महासभा व लोकतंत्र बचाओ अभियान

संथाल परगना के बांग्ला-भाषी मुसलमान भारतीय हैं और न कि बांग्लादेशी घुसपैठिये

हाल के दिनों में भाजपा लगातार प्रचार कर रही है कि संथाल परगना में बड़ी संख्या में बांग्लादेशी घुसपैठिए आ रहे हैं जो आदिवासियों की ज़मीन हथिया रहे है, आदीवासी महिलाओं से शादी कर रहे हैं और आदिवासियों की जनसंख्या कम हो रही है। क्षेत्र में हाल की कई हिंसा की घटनाओं को जोड़ते हुए इन दावों पर सामाजिक व राजनैतिक माहौल बनाया जा रहा है। ज़मीनी सच्चाई समझने के लिए झारखंड जनाधिकार महासभा व लोकतंत्र बचाओ अभियान के एक प्रतिनिधिमंडल ने संथाल परगना जाकर हर सम्बंधित मामले का तथ्यान्वेषण किया। पाए गए तथ्यों को आज प्रेस क्लब, रांची में प्रेस वार्ता में साझा किया गया। तथ्यान्वेषण रिपोर्ट संलग्न है।

तथ्यान्वेषण दल ने पाकुड़ व साहिबगंज के हाल के प्रमुख मामलों जैसे गायबथान, गोपीनाथपुर, तारानगर-इलामी, केकेएम कॉलेज आदि के छात्रों, पीड़ितों, आरोपियों, दोनों पक्षों के ग्रामीणों, ग्राम प्रधानों व स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ताओं से विस्तृत बात की। मामलों में दर्ज प्राथमिकियों व संबंधित दस्तावेजों का अध्ययन किया। 1901 से अब तक की जनगणना के आंकड़ों, संबंधित सेन्सस रिपोर्ट, गज़ेटियर व क्षेत्र के डेमोग्राफी से जुड़े शोध पत्रों का भी आंकलन किया गया। दल ने पाया कि ज़मीनी हक़ीकत भाजपा के संप्रदायीक दावों से कोसो दूर है।

मामले निम्न हैं - गायबथान गाँव में एक आदिवासी परिवार और मुसलमान परिवार में लगभग 30 सालों से एक ज़मीन पर विवाद चल रहा था। इसी विवाद में मुसलमान परिवार ने आदिवासी की ज़मीन को जबरन कब्ज़ा करने की कोशिश की जिसके बाद 18 जुलाई को दोनों पक्षों के बीच मारपीट हुई। इसके विरुद्ध केकेएम कॉलेज के आदिवासी छात्र संघ के छात्र 27 जुलाई को विरोध प्रदर्शन किये। इसके एक रात पहले पुलिस ने कॉलेज की हॉस्टल में छात्रों की व्यापक पिटाई की। तारानगर-इलामी में सोशल मीडिया पर एक हिंदू लड़की की फ़ोटो तथाकथित शेयर करने के लिए हिंदू परिवारों ने एक मुसलमान युवा और उसकी मां को पीटा। इसके बाद मुसलमान महिला के मृत्यु की अफ़वाह फैलने के बाद मुसलमानों ने बड़ी संख्या में हिंदू टोले में तोड़-फोड़ मारपीट की। गोपीनाथपुर में बकरीद में क़ुरबानी के विवाद में संटे मुर्शिदाबाद के गाँव के मुसलमानों और गोपीनाथपुर के हिन्दुओं व पुलिस के बीच हिंसा हुई। विस्तृत जानकारी के लिए रिपोर्ट देखें।

भाजपा के राज्य व राष्ट्रीय-स्तरीय नेता लगातार यह बोल रहे हैं कि बंगलादेशी मुसलमान घुसपैठिये इन घटनाओं के लिए जिम्मेवार हैं। लेकिन तथ्यान्वेंशन के दौरान दल ने यह पाया कि जो भी घटना हुई है, वहीं के रहने वाले समुदायों व स्थानीय लोगों के बीच हुई है। इन सभी गावों के किसी भी ग्रामीण – आदिवासी, हिंदू या मुसलमान – ने बांग्लादेशी घुसपैठियों के बसने की बात नहीं की। यहां तक कि तारानगर-इलामी में रहने वाले भाजपा के मंडल अध्यक्ष भी बोले कि उनके क्षेत्र में सभी मुसलमान वहीं के निवासी है। इसी गाँव के मामले को निशिकांत दुबे ने बांग्लादेशी घुसपैठियों द्वारा हिंसा का मामला बनाकर उछाला था। दल ने कई गावों का दौरा किया एवं सभी गावों में ग्रामीणों, शहर के लोगों, छात्रों, जन प्रतिनिधियों आदि से पूछा कि किसी को आजतक एक भी बांग्लादेशी घुसपैठी की जानकारी है या नहीं। सबने बोला कि नहीं है। जब पूछा गया कि घुसपैठी की बात कहां सुने हैं, सबने कहा कि सोशल मीडिया पर सुने हैं लेकिन आजतक देखे नहीं हैं। चाहे ज़मीन लेकर बसने की बात हो, आदिवासी महिलाओं से शादी की बात हो या हाल के हिंसा की बात हो, इनमें बांग्लादेशी घुसपैठी का कोई सवाल ही नहीं है।

वर्तमान में पाकुड़ व साहेबगंज में रहने वाले मुसलमान समुदाय का एक बड़ा हिस्सा शेर्षाबादिया है जो अनेक दशकों से वहां बसे हैं। इसके अलावा झारखंड में बसे व पड़ोसी राज्यों से आये पसमांदा व अन्य समुदाय हैं। इनमें से अनेक जमाबंदी रैयत हैं और अनेक पिछले कुछ दशक में आसपास के ज़िला/राज्य से आकर बसे हैं। ऐतिहासिक रूप से शेर्षाबादिया मुसलमान समुदाय मुग़ल काल से गंगा के किनारे (राजमहल से वर्तमान बांग्लादेश के राजशाही ज़िला तक) बसे रहे हैं। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि जितने भी जगह के मामलों को भाजपा ने उठाया है, अधिकांश गावों में सांप्रदायिक हिंसा का कोई इतिहास नहीं है। भाजपा लगातार बोल रही है कि बांग्लादेशी घुसपैठिये के कारण पिछले 24 सालों में आदिवासियों की जनसँख्या 10-16% कम हुई है। पहली बात तो बांग्लादेशी घुसपैठीयों के बसने का ही कोई प्रमाण नहीं है। दूसरी बात, जनगणना के आंकड़ों के अनुसार संथाल परगना क्षेत्र में 1951 में 46.8% आदिवासी, 9.44% मुसलमान और 43.5% हिंदू थे। वही 1991 में 31.89% आदिवासी थे और 18.25% मुसलमान। आखिरी जनगणना (2011) के अनुसार क्षेत्र में 28.11% आदिवासी थे, 22.73%% मुसलमान और 49% हिंदू थे। 1951 से 2011 के बीच हिन्दुओं की आबादी 24 लाख बढ़ी है, मुसलमानों की 13.6 लाख और आदिवासियों की 8.7 लाख।

यह तो स्पष्ट है कि भाजपा द्वारा संसद और मीडिया में पेश किये जा रहे आंकड़े झूठे हैं । लेकिन कुल जनसँख्या में आदिवासियों का घटता अनुपात गंभीर विषय है और इसके मूल कारणों को समझने की ज़रूरत है। आदिवासियों के अनुपात में व्यापक गिरावट 1951 से 1991 के बीच हुई और अभी भी जारी है। इसके तीन प्रमुख कारण हैं: 1) दशकों से आदिवासियों की जनसंख्या वृद्धि दर अपर्याप्त पोषण, अपर्याप्त स्वास्थ्य व्यवस्था, आर्थिक तंगी के कारण गैर-आदिवासी समूहों से कम है, 2) संथाल परगना क्षेत्र में झारखंड, बंगाल व बिहार से मुसलमान और हिंदू आकर बसते गए और आदिवासियों से ज़मीन खरीदते गए, 3) संथाल परगना समेत पूरे राज्य के आदिवासी दशकों से लाखों की संख्या में पलायन करने को मजबूर हो रहे हैं जिसका सीधा असर उनकी जनसँख्या वृद्धि दर पर पड़ता है।

इस परिस्थिति से जुड़ा एक प्रमुख मुद्दा है आदिवासियों की ज़मीन का, जो भाजपा की सांप्रदायिक राजनीति में छुप जा रही है। तथ्यान्वेषण दल ने यह भी पाया कि संथाल परगना टेनेंसी एक्ट का व्यापक उल्लंघन हो रहा है और बड़े पैमाने पर आदिवासी अपनी ज़मीन दान-पत्र व आपसी लेन-देन (जो अनौपचारिक और गैर-

क़ानूनी व्यवस्था है) करके गैर-आदिवासियों - मुसलमान व हिंदू - को बेच रहे हैं। संथाल परगना और पास के जिलों/राज्यों के गैर-आदिवासी ज़मीन खरीद रहे हैं। संथाल परगना टेनेंसी एक्ट में आदिवासी ज़मीन पूर्ण रूप से non-transferable है, जिसे आदिवासी भी नहीं खरीद सकते हैं। लेकीन आर्थिक तंगी में आदिवासी ज़मीन आपसी लेन-देन करके गैर-आदिवासियों को बेच रहे हैं। गौर करने की बात है कि संथाल परगना से संटे बंगाल और बिहार में ज़मीन का मूल्य संथाल परगना के non-transferable ज़मीन के अनौपचारिक दाम से कहीं ज्यादा है। क्षेत्र के transferable ज़मीन का मूल्य भी non-transferable ज़मीन के अनौपचारिक मूल्य से कहीं ज़्यादा है। यह भी देखा गया है कि गैर-आदिवासियों की प्रशासन में पहुंच ज्यादा मज़बूत है, जिसके कारण विवाद की स्थिति में अक्सर उनके पक्ष में ही निर्णय होता है।

भाजपा यह भी फैला रही है कि बांग्लादेशी मुसलमान ज़मीन लूटने के लिए आदिवासी महिलाओं से शादी कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में अनुसूचित जनजाति आयोग की सदस्य व भाजपा नेता आशा लकड़ा ने 28 जुलाई को प्रेस वार्ता कर एक सूची जारी की जिसमें संथाल परगना क्षेत्र की 10 आदिवासी महिला जन प्रतिनिधियों और उनके मुसलमान पति के नाम थे। उन्होंने कहा कि रोहिंग्या मुसलमान व बांग्लादेशी घुसपैठिये आदिवासी महिलाओं को फंसा रहे हैं। तथ्यान्वेषण दल ऐसी कई महिलाओं से मिला। ऐसा एक भी मामला नहीं मिला जिसमें बांग्लादेशी मुसलमान घुसपैठिये से शादी हुई हो। स्थानीय ग्रामीणों को भी ऐसे किसी मामले की जानकारी नही है। इन 10 में 6 महिलाओं ने स्थानीय मुसलमानों से शादी की है और तीन के पति तो आदिवासी ही हैं।

क्षेत्र में आदिवासी महिलाओं द्वारा हिंदू व मुसलमान गैर-आदिवासियों से शादी करने के कई उदहारण है। पर इन महिलाओं ने अपनी सहमति और आपसी पसंद से शादी की है। यह भी ध्यान देने की ज़रूरत है कि राजनैतिक दलों और लोगों द्वारा सोशल मीडिया पर महिलाओं की सूची और उनके व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी बातों को प्रसारित करना उनकी निजता के अधिकार का व्यापक उल्लंघन है।

यह साफ़ है कि भाजपा राज्य के मुसलमानों को बांग्लादेशी घुसपैठी घोषित करके आदिवासियों, हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच सामाजिक व राजनैतिक दरार पैदा करना चाहती है। उसका उद्देश्य है झारखंड के विधान सभा चुनाव के पहले धर्मिक व सामाजिक ध्रुवीकरण पैदा करना।

संथाल परगना में आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक समस्याएं पूर्व व वर्तमान राज्य सरकार की विफ़लता को भी दर्शाती है। संथाल परगना समेत राज्य के अन्य क्षेत्रों के मूल मुद्दे जैसे – आदिवासियों की कमज़ोर आर्थिक स्थिति, गैर-आदिवासियों का SPTA का उल्लंघन कर ज़मीन खरीदना, सरकारी नौकरियों पर गैर-आदिवासियों और अन्य राज्यों के लोगों का कब्ज़ा, अपर्याप्त पोषण, अपर्याप्त स्वास्थ्य व्यवस्था, आर्थिक तंगी के कारण आदिवासियों का अधिक मृत्यु दर दर आदि – पर सरकार की कार्यवाई निराशाजनक है।

झारखंड जनाधिकार महासभा व लोकतंत्र बचाओ अभियान राज्य सरकार से निम्न मांगे करते हैं:

- भाजपा व अन्य किसी भी नेता या सामाजिक संगठन द्वारा बांग्लादेशी घुसपैठिये, लैंड जिहाद, लव जिहाद जैसे शब्दों का प्रयोग, जो विभिन्न घटनाओं को इनके साथ जोड़ने व साम्प्रदायिकता फ़ैलाने के लिए करती है, उनके विरुद्ध न्यायसंगत कार्यवाई हो। किसी भी परिस्थिति में समाज के तानेबाने को तोड़ने न दिया जाए।
- गायबथान, तारानगर-इलामी, गोपीनाथपुर, कुलापहाड़ी व केकेएम कॉलेज घटना में पुलिस दोषियों के विरुद्ध न्यायसंगत कार्यवाई करें। केकेएम कॉलेज के छात्रावास में छात्रों पर हुई हिंसा के लिए दोषी पुलिस पदाधिकारियों व कर्मियों के विरुद्ध न्यायसंगत कार्यवाई हो।
- संथाल परगना टेनेंसी एक्ट का कड़ाई से पालन हो। किसी भी परिस्थिति में आदिवासी ज़मीन गैर-आदिवासी को बेचा न जाए। जल्द से जल्द revisional survey को पूरा कर सर्वे रिपोर्ट जारी हो। पांचवी अनुसूची और पेसा प्रावधानों का कड़ाई से पालन हो।
- साहिबगंज व पाकुड़ समेत संथाल परगना के अन्य ज़िला प्रशासन द्वारा बांग्लादेशी घुसपैठी की जनता द्वारा जानकारी देने के लिए स्थापित फ़ोन व्यवस्था को तुरंत रद्द किया जाए।
- संथाल परगना समेत राज्य के सभी पांचवी अनुसूची क्षेत्र में आदिवासियों की आर्थिक स्थिति, कम जनसँख्या वृद्धि दर के कारण, गैर-आदिवासियों का बसना, गैर आदिवासियों का नौकरियों पर कब्ज़ा, आदिवासियों का पलायन आदि पर अध्ययन के लिए राज्य सरकार एक उच्च स्तरीय समिति का गठन करे। रिपोर्ट में जिन मूल मुद्दों पर चर्चा की गई है, उन पर राज्य सरकार त्वरित कार्यवाई करे।

साइकिल पाकर खिले बालिकाओं के चेहरे

प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम नागेपुर में अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर आशा ट्रस्ट और लोक समिति द्वारा AID के सहयोग से 51 मेधावी लडकियों को लोक समिति आश्रम पर साईकिल दिया गया। अतिथि के तौर पर आए पूर्व विधायक अजय राय, विधायक निलरतन पटेल की सुपुत्री अदिति सिंह, रामधीरज भाई, वल्लभ पाण्डेय, रंजू सिंह, अमन सिंह आदि लोगों के हाथों साईकिल पाने वाली इन लड़कियों की आज खुशी का कोई सीमा नहीं थी।

गतांक से आगे...

राजघाट परिसर : साजिश की किस्सागोई

कूटरचित और फर्जीवाडा का आरोप लगाने वाले नॉर्दर्न रेलवे के अधिकारियों के ऊपर न्यायिक दस्तावेजों के साथ छेड़छाड़ की धारा 340 के तहत सर्व सेवा संघ ने उप जिलाधिकारी, सदर वाराणसी के न्यायालय में एक मुकद्दमा दर्ज किया। उप जिलाधिकारी जयदेव सी एस ने इस आपराधिक मुकदमे की अलग से सुनवाई करने के बजाय पहले से चल रहे रेलवे के मुकदमे के साथ इसे नत्थी कर दिया। एक बार भी इस पर सुनवाई न कर पूर्व के मुकदमे के साथ ही इसे भी डिस्पोज कर दिया। धारा 341 के तहत इसकी अपील की गई है।

उप जिलाधिकारी ने क्षेत्राधिकार का उल्लंघन करते हुए अपने 28 जून 2023 के फैसले के द्वारा राजस्व अभिलेख के नाम मलिकान कॉलम से सर्व सेवा संघ का नाम हटाकर नॉर्दर्न रेलवे, लखनऊ का नाम अंकित करने का आदेश दे दिया। आनन- फानन में इस पर अमल भी हो गया। सनद रहे कि उप जिलाधिकारी को खतौनी-रेवेन्यू रिकॉर्ड से नाम हटाने और नए नाम को जोड़ने का अधिकार तबतक नहीं है जब तक कि सिविल न्यायालय उक्त सेल डीड को खारिज न कर दे । उप जिलाधिकारी को सिर्फ नाम में हुए हिज्जे या स्पेलिंग को ही दुरुस्त करने का अधिकार प्राप्त है।

इस फैसले के खिलाफ प्रक्रियागत बाध्यता को ध्यान में रखते हुए कमिश्नरी कोर्ट, वाराणसी में अपील किया गया। कई महीनो से बाद इसकी सुनवाई हुई और सरकारी पक्ष के अनुपस्थित रहने और रुक-रुक कर पुकार करने के बावजूद 31 जनवरी 2023 को अपर आयुक्त, वाराणसी ने उप जिला अधिकारी, सदर वाराणसी के फैसले को बहाल रखा। कमिश्नरी कोर्ट के इस फैसले को रेवेन्यू बोर्ड, इलाहाबाद में चुनौती दी गई है।

सर्व सेवा संघ की जमीन हड़पने की साजिश में जिलाधिकारी एस राजलिंगम की भूमिका भी पक्षपात पूर्ण और संदिग्ध है। गांधी विद्या संस्थान से संबंधित विवाद का एक मुकदमा संख्या 29975 / 2007 इलाहाबाद हाईकोर्ट में लंबित था। गांधी विद्या संस्थान की जमीन सर्व सेवा संघ की है और इस पर भवनों का निर्माण उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के द्वारा किया गया था। इस संबंध में सर्व सेवा संघ और गांधी स्मारक निधि में एक एमओयू भी हुआ था जिसमें यह प्रावधान है कि अगर किसी कारण से गांधी विद्या संस्थान बंद हो जाता है या अन्यत्र स्थानांतरित हो जाता है तो जमीन स्वतः सर्व सेवा संघ की हो जाएगी और भवनों का इस्तेमाल दोनों संस्थाएं आपसी सहमति से करेगी।

इस मुकदमे की पैरवी मुस्तैदी से नहीं की जा रही थी। अतः सर्व सेवा संघ ने एम ओ यू के उक्त प्रावधान के आधार पर इलाहाबाद हाईकोर्ट में रीजाइंडर देकर जमीन वापस करने का निवेदन किया। 16 मई 2023 को न्यायमूर्ति आलोक माथुर के बेंच ने इस आवेदन को स्वीकार करते हुए आदेश पारित किया और वाराणसी के जिलाधिकारी को निर्देशित किया कि सर्व सेवा संघ की जमीन संबंधी कागजातों का परीक्षण कर, सही पाए जाने पर, उसे सौंप दें। वाराणसी प्रशासन ने इस सामान्य फैसले को अपनी साजिश का हिस्सा बना लिया और जिलाधिकारी ने स्वतः संज्ञान लेते हुए उत्तर रेलवे को भी एक पक्ष बना दिया जबकि इलाहाबाद हाई कोर्ट के मुकदमे में उत्तर रेलवे का दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं रहा है। यहां इस तथ्य को भी रेखांकित करना दिलचस्प है कि न्यायमूर्ति आलोक माथुर ने अपने आदेश में यह कहा था कि आदेश के सत्यापित कॉपी मिलने के 60 दिन के अंदर जिलाधिकारी इस मामले का निपटारा करें। जानकारी के अनुसार जिलाधिकारी को हमारी ओर से कोई सत्यापित कॉपी नहीं दी गई थी और एक तकनीकी त्रुटि को दूर करने के लिए आवेदन किया गया था। इस फैसले के तुरंत बाद न्यायालय में गर्मी की छुट्टियां हो गई और बाद में आलोक माथुर जी का लखनऊ स्थानांतरण हो गया। यह रहस्य आज भी बना हुआ है कि वाराणसी के जिलाधिकारी ने सत्यापित कॉफी के आधार पर अपनी कार्रवाई की या फिर यूं ही आदेश के प्रिंटआउट के आधार पर। जिलाधिकारी ने 29 मई 2023 को सर्व सेवा संघ और उत्तर रेलवे को साक्ष्य के साथ अपने कार्यालय में पक्ष रखने के लिए सूचित किया। सर्व सेवा संघ ने 14 साक्ष्य प्रस्तुत किए। उत्तर रेलवे ने एक पुराना नक्शा प्रस्तुत किया जिसमें उत्तर रेलवे दर्शाया गया है। इस प्रहसन के एक महीने के अंदर 26 जून 2023 को जिलाधिकारी ने सर्व सेवा संघ की खरीदी हुई जमीन के दस्तावेजों को अवैध घोषित करते हुए उसे नॉर्दर्न रेलवे का बता दिया। यहां यह जानना जरूरी है की टाइटल डिसाइड करने का अधिकार सिर्फ सिविल न्यायालय को है लेकिन जिलाधिकारी ने अपने क्षेत्राधिकार का उल्लंघन करते हुए न केवल टाइटल डिसाइड किया बल्कि इलाहाबाद हाई कोर्ट के निर्देश को हास्यास्पद बना दिया।

26 जून 2023 के इस फैसले के दूसरे दिन ही उत्तर रेलवे ने सर्व सेवा संघ के भवनों पर सूचना चिपका दी कि 30 जून 2023 की सुबह 9:00 बजे तक परिसर खाली कर दें। कुल मिलाकर 50 घंटे से भी कम का वक्त दिया गया। इसके बाद उत्तर रेलवे के इस आदेश पर स्थगन के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में दो बार एस एल पी दायर किया गया लेकिन राहत नहीं मिली।

अंततः साजिशें सफल हुई। 22 जुलाई 2023 को बिना किसी अदालती आदेश के वाराणसी एवं रेल प्रशासन हजारों पुलिस कर्मियों के साथ परिसर में घुस आए और कार्यकर्ताओं और कार्यालय के समान को उठाकर बाहर फेंक दिया। गांधी विचार की 2.5 करोड़ की किताबों को नष्ट करने का प्रयास किया। विरोध करने पर सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष चंदन पाल, उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष राम धीरज, नंदलाल मास्टर सहित 8 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। उप जिलाधिकारी वाराणसी के जयदेव सी एस और रेल अधिकारी आकाशदीप सिंह इस दमन, बर्बरता और गैरकानूनी हरकत का नेतृत्व कर रहे थे। सर्व सेवा संघ ने इन अधिकारियों पर अवैध रूप से परिसर में घुसने और सामानों को क्षति पहुंचाने के लिए मुकदमा दर्ज किया है।

इस तरह दिल्ली के राजघाट से लेकर वाराणसी के राजघाट तक षड्यंत्र का एक सफर पूरा होता है। इस षड्यंत्र के पीछे एक ही चालक शक्ति है - आरएसएस और उनके विचारों से प्रेरित भारतीय जनता पार्टी की सरकार। कुछ चुनिंदे और लुटेरे अधिकारी संविधान की शपथ की धज्जियां उड़ाते हुए प्यादों की तरह ऐसे हिलते-डुलते नजर आते हैं मानो अपनी रीड की हड्डियों को उन्होंने निकाल कर कहीं और रख छोड़ा है। लेकिन गांधी के हत्यारों से लेकर किताबों के कातिलों तक के विरुद्ध इंसानियत की ताकते भी आज मुखर है। साजिशों को नाकाम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

- अरविंद अंजुम

विकास के नाम पर विध्वंस की कहानी

प्रशिक्षण देने वालों में जयप्रकाश नारायण, दादा धर्माधिकारी, नारायण देसाई, आचार्य राममूर्ति, धीरेंद्र मजूमदार, ठाकुरदास बंग, सिद्धराज ढढ्ढा, किशन पटनायक, अमरनाथ भाई जैसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और समाज निर्माता सम्मिलित रहे.

ज्ञातव्य है कि सर्व सेवा संघ सामाजिक और आध्यात्मिक पुस्तकों के सस्ते प्रकाशन के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। ये पुस्तकें लगभग 62 रेलवे स्टेशनों पर स्थापित 'सर्वोदय बुक स्टालों' और सर्वोदय कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित हजारों सर्वोदय साहित्य केंद्रों के जरिए देशभर में पहुंचकर स्वस्थ- संवेदनशील सामुदायिक समाज निर्माण की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

इसी परिसर में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने 1962 में विश्व भर में गांधी वादी प्रयोगों के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए 'गांधी विद्या संस्थान' की स्थापना की थी। परिसर के भीतर अध्यात्म, स्वास्थ्य, गांधी विनोबा और जे पी के विचारो के प्रचार प्रसार के लिए पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण किया जाता रहा है।

विनोबा और भूदान आन्दोलन

इस क्रम में हमें विनोबा के भूदान आन्दोलन को भी समझना आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य है। भूदान आन्दोलन सन्त विनोबा भावे द्वारा सन् 1951 में आरम्भ किया गया था। यह स्वैच्छिक भूमि सुधार आन्दोलन था। विनोबा की कोशिश थी कि भूमि का पुनर्वितरण सिर्फ सरकारी कानूनों के जरिए नहीं हो, बल्कि एक आंदोलन के माध्यम से इसकी सफल कोशिश की जाए। 20वीं सदी के पांचवें दशक में भूदान आंदोलन को सफल बनाने के लिए विनोबा ने गांधीवादी विचारों पर चलते हुए रचनात्मक कार्यों और ट्रस्टीशिप जैसे विचारों को प्रयोग में लाया। उन्होंने सर्वोदय समाज की स्थापना की दिशा में एक प्रयास किया। यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय संघ था। इसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था। लगभग 14 वर्षों में विनोबा ने दान में मिली 45 लाख एकड़ भूमि में से 1961 तक 8.72 लाख एकड़ जमीन गरीबों व भूमिहीनों के बीच बांटी जा सकी थी।

जय प्रकाश नारायण एवं गांधी विद्या संस्थान

यहां सर्व सेवा संघ, राजघाट वाराणसी परिसर में स्थित 'गांधी विद्या संस्थान' की स्थापना लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने की थी। गांधी विद्या संस्थान की स्थापना के मूल उद्देश्य को जानने के लिए उसके प्रवेश से ही हमें इन शब्दों से सामना होता है-

"जहां तक मैं समझा हूँ गांधीवादी आन्दोलन एवं समाज विज्ञान को जोड़ने की पहल गांधी विद्या संस्थान ने की है। यदि यह प्रयास सफल होता है तो इसके युगांतकारी परिणाम होंगे।"

"As for as I know the Gandhian Institute of Studies represents the first attempt to link together the Gandhian movement and social sciences. If this attempt succeeds the result will be of incalculable value."

गांधी विद्या संस्थान, सम्पूर्ण क्रांति के जनक लोकनायक जयप्रकाश नारायण के इसी सपने को साकार करने की कोशिश तथा शोध सामग्री से समृद्ध पुस्तकालय के कारण आज भी वैश्विक स्तर पर अपनी प्रासंगिकता रखता है. गांधी विद्या संस्थान अनेक वर्षो से विवादों के घेरे में है और बन्द है।

सर्व सेवा संघ की वर्तमान गतिविधियां

वर्तमान में सर्व सेवा संघ की बालवाड़ी वर्तमान में अनेक गरीब बेसहारा बच्चों को उनकी शिक्षा का अधिकार निःशुल्क प्रदान करा रही है। समग्र स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु दवा रहित स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन, स्पिरिचुअल टैबलेट्स रिसर्च फाउंडेशन के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन, साप्ताहिक स्वच्छता कार्यक्रम, ध्यान शिविर, आध्यात्मिक मार्शल आर्ट प्रशिक्षण आदि गतिविधियां संचालित हो रही हैं। आगामी समय में पर्यटन गतिविधियों का केंद्र बन रही काशी को दृष्टिगत रखते हुए काशी की इस धरोहर को पर्यटकों के लिए खोलने, गांधी, विनोबा और जे पी अध्ययन एवं शोध पीठ स्थापित करने, आरोग्य विद्यापीठ की स्थापना, मिलेट्स आधारित देशी रसोई आरंभ करने, योग एवं पिरामिड ध्यान केंद्र स्थापित करने जैसी अनेक योजनाओं पर कार्य तीव्र गति से चल रहा है।

सर्व सेवा संघ परिसर अनेक ऐतिहासिक धरोहर को समेटे हुए है जिसमें जयप्रभा स्मृति भवन, लोकनायक की पुरानी जीप, दो सौ वर्ष पुराना पीपल और बरगद, 150 वर्ष पुराना वाल्टेयर कुआं आदि।

सर्व सेवा संघ परिसर भारत की आजादी, इतिहास और राष्ट्रीयता की दृष्टि से एक विशेष तीर्थ स्थली सरीखा है। परिसर प्रत्येक प्रकार के वैचारिक अभिव्यक्ति को आवाज देने का पूर्ण अवसर प्रदान करता है। लगभग निःशुल्क व्यवस्था के साथ परिसर प्रायः सभी प्रकार के लोगों के लिए प्रिय स्थल के रुप में जाना जाता है। विशाल विनोबा सभागार, अनेक दुर्लभ पुस्तकों से सुसज्जित ग्रन्थालय और प्रकाशन इस केन्द्र को गांधी विचारों पर शोध करने वालों के लिए अपरिहार्य स्थल के रुप में जाना जाता था।

काशी मल्टी मॉडल डेवेलपमेंट प्लान पर आपत्तियां-

इस परियोजना को गंगा किनारे विकसित किया जा रहा है। डी.पी.आर. स्वयं स्वीकार करती है कि परियोजना का गंगा के 200 मीटर के प्रतिबन्धित क्षेत्र में विकसित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत 23 मंदिरों, 2 मस्जिद, मजार आदि को हटाया जाएगा। वाराणसी की महत्वपूर्ण धार्मिक महत्व होने के कारण इस सम्पूर्ण परियोजना में निम्न गम्भीर आपत्तियां हैं-

1. काशी ज्ञान की नगरी है। इसे मोक्ष की नगरी के रुप में भी मान्यता प्राप्त है।
2. वैदिक धर्म के उत्थान एवं विकास में काशी का अद्वितीय योगदान रहा है।
3. काशी का महत्व एक तीर्थ के रूप में सर्वविदित है।
4. योग समेत सभी 6 दर्शनों के विकास में काशी का विशेष महत्व है।
5. मोक्षदायिनी नगरी काशी की पवित्र भूमि वरुणा और अस्सी के बीच मानी जाती है।
6. 350 करोड़ के इंटर माडल स्टेशन का संपूर्ण क्षेत्र मुख्यतः वरुणा से लेकर राजघाट के मध्य विकसित किया जा रहा है।
7. अधिकारी इस क्षेत्र की महत्ता और इस ऊर्जाक्षेत्र से अपरिचित हैं। उन्हे यह नहीं पता कि किसी भी ऊर्जाक्षेत्र का विकास हजारों वर्षो में होता है। काशी के ऊर्जा क्षेत्र का विकास 3500 वर्षों में हुआ है।
8. यह एक तपोभूमि है जहां असंख्य तपस्वियों ने ज्ञान की साधना की।
9. असंख्य संतों, मनीषियों, ज्ञानियों और कबीर दास, संत रविदास की भूमि काशी का कोई भी विकल्प न था न ही अन्य काशी बनाई जा सकती है।
10. विद्यालय, स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय आदि जीवन की तैयारी की शिक्षा देने के केन्द्र हैं। किन्तु मात्र काशी ही वाराणसी एक ऐसा ही ज्ञान का केंद्र है, जो मृत्यु को सहज करने का ज्ञान देता है। यह विश्व का एकमात्र केंद्र है जहां जीवन से मृत्यु की ओर जाने के मार्ग का ज्ञान प्राप्त होने की विधियां खोजी गयीं। वरुणा और अस्सी के मध्य का संपूर्ण का क्षेत्र दुनिया का एकमात्र ऐसा ज्ञान का केंद्र है जहां मृत्यु के समय के ज्ञान को प्राप्त करने की सुविधा है।
11. हजारों वर्षों से काशी को ज्ञानियों ने मोक्ष नगरी के रूप में स्वीकार किया है। इसे तीर्थ क्षेत्र के रूप में मान्यता दी गई है। इसे शिव की नगरी के रूप में स्वीकार किया जाता है जिन्हें हिंदू धर्म में संहार के देवता की मान्यता है।
12. शिव को आदि योगी की संज्ञा दी गई है।

विज्ञान भैरव तंत्र दुनिया का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसमे चेतना को उद्घाटित करने की 112 विधियां दी गई हैं। अन्तजगत के मार्ग का संकेत करने वाली विधियां मानव जगत को अद्वितीय देन हैं। ज्ञानी जन ऐसा कहते हैं कि इन विधियों का अनुसरण करके व्यक्ति जन्म मृत्यु को जान जाता है और इनसे मुक्त हो जाता है।

विवाद का प्रारम्भ

वर्तमान में सभी विवाद का मूल कारण बना काशी में निर्मित होने वाला इंटर मॉडल स्टेशन काशी के निर्माण की प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी परियोजना। इस परियोजना में विभिन्न चरणों में 6 रेलवे स्टेशन, बस टर्मिनल, कार पार्किंग, कामर्शियल भवन, 300 कमरों का होटल, 500 कमरों का होटल प्लाजा, 400 कमरों का 3 स्टार होटल का विकास किया जाना है।

प्रधानमंत्री की इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए आनन फानन में न्यायालय से सक्षम आदेश प्राप्त किए बिना एक ऐतिहासिक धरोहर को 12 अगस्त को जमींदोज कर दिया गया। यद्यपि डी.पी.आर. सर्व सेवा संघ के क्षेत्र को स्वीकार करती है। देखें-2 इंटर मोडल स्टेशन काशी का डी.पी.आर.।

साजिश का सिलसिला

सर्व सेवा संघ की भूमि पर कब्जा करने की कहानी हमें अंग्रेजों की याद दिला देगी। सर्व सेवा संघ प्रकाशन से सम्बद्ध अरविन्द अंजुम जी समूचे प्रकरण पर अपनी बात को क्रमवार बताते हैं- वे कहते हैं कि यह मामला इसी बरस शुरू हुआ, जब 16 जनवरी 2023 को उपजिलाधिकारी, वाराणसी के पास किसी मोइनुद्दीन नामक व्यक्ति और ग्रामवासियों के कथित शिकायत-पत्र में यह कहा गया कि इन भूमि खण्डों से सम्बन्धित मालिकान में नॉर्दर्न रेलवे की जगह सर्व सेवा संघ का नाम दर्ज हो गया है, जिसे सुधारकर नॉर्दर्न रेलवे किया जाए।

इस आवेदन पर त्वरित संज्ञान लेते हुए उपजिलाधिकारी ने आदेश जारी कर दिया, जबकि उक्त आवेदक का पता, फोन नम्बर, आधार कार्ड नम्बर कुछ भी दर्ज नहीं है। इस तथाकथित शिकायतकर्ता की कोई गवाही भी नहीं हुई, न वह कभी सामने आया, जिससे इस व्यक्ति के होने पर ही सन्देह है।

10 अप्रैल, 2024 को उपजिलाधिकारी (सदर), वाराणसी के यहाँ नॉर्दर्न रेलवे की ओर से मुकदमा दर्ज किया गया, जिसमें कहा गया कि सर्व सेवा संघ ने कूटरचित तरीके से फर्जी बैनामे बनाकर फर्जीवाड़े के जरिए रेलवे की जमीन पर कब्जा कर लिया है।

गौरतलब यह है कि रेलवे फर्जीवाड़ा करने का आरोप किस पर लगा रहा है - सर्व सेवा संघ के इस केन्द्र को बनाने के लिए इस जमीन-खरीद पर तत्कालीन केन्द्रीय वाणिज्य मन्त्री लालबहादुर शास्त्री जी की सहमति, देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी की संस्तुति, और तत्कालीन रेलमन्त्री जगजीवन राम जी की स्वीकृति शामिल थी।

रेलवे की पिटीशन में कहा गया कि रेलवे की ओर से जिस डिवीजनल इन्जीनियर ने बैनामे पर हस्ताक्षर किए हैं- वह पद रेलवे में कभी था ही नहीं, जबकि यह पद ब्रिटिश इण्डिया के जमाने से ही था, और इसके प्रमाण अदालत को सौंपे गए हैं।

इसी बीच 2007 से इलाहाबाद हाईकोर्ट में लम्बित गांधी विद्या संस्थान से सम्बन्धित वाद संख्या 29975 के सिलसिले में 16 मई 2023 को यह फैसला आया कि भू-अभिलेखों का परीक्षण कर वाराणसी के जिलाधिकारी उक्त भूखण्ड (जो सर्व सेवा संघ के ही परिसर का एक हिस्साभर है) को सर्व सेवा संघ को सौंप दें।

जिलाधिकारी, वाराणसी ने थर्ड पार्टी रेलवे को खड़ाकर इस परिसर की सारी जमीन - 12.89 एकड़ रेलवे को सौंप देने का आदेश 26 जून को दे दिया, जबकि यह सिविल मैटर है, जो जिलाधिकारी के क्षेत्राधिकार में नहीं आता इसका निर्धारण न्यायालय द्वारा ही होना चाहिए।

26 जून के इसी आदेश को आधार बनाकर 28 जून 2023 को उपजिलाधिकारी ने रेलवे के पक्ष में फैसला दे दिया कि खतौनी से सर्व सेवा संघ का नाम हटाकर नॉर्दर्न रेलवे का नाम दर्ज किया जाए - यह भी उपजिलाधिकारी के क्षेत्राधिकार में नहीं आता, यह सिविल न्यायालय का मामला है।

रेलवे ने जिलाधिकारी के 26 जून के अवैध आदेश को आधार बनाकर बिना हस्ताक्षर-मोहर के परिसर के भवनों पर 27 जून को ध्वस्तीकरण का नोटिस इस आदेश के साथ चस्पा कर दिया कि दो दिन के भीतर परिसर खाली कर दिया जाए - अर्थात ढाई करोड़ मूल्य की पुस्तकों के हटाने के लिए महज 2 दिन का समय!

22 जुलाई को रेल अधिकारी आकाशदीप सिंह और उपजिलाधिकारी जयदेव सी एस हजारों पुलिसकर्मियों के साथ सुबह 6.30 बजे ही परिसर में घुसे, और उन्होंने बिना किसी अदालती आदेश के सर्व सेवा संघ के परिसर को जबरन खाली करा लिया।

12 अगस्त को रेलवे और प्रशासन की मिलीभगत से परिसर में स्थित करीब 2 दर्जन इमारतों को बुलडोजर के जरिए जमीन्दोज कर दिया गया।

इस सम्बन्ध में लगभग विगत 15 महीने के न्यायालय प्रक्रिया में लगभग 100 डेट लगने के बाद एक सुखद पहलू यह रहा कि न्यायपालिका ने समस्त प्रकरण पर अपना फैसला सुनाया।

न्यायालय सिविल जज (सीनियर डिवीजन 1) वाराणसी के माननीय जज हितेश अग्रवाल ने 12 सितंबर 2024 को सर्व सेवा संघ बनाम उत्तर प्रदेश सरकार व अन्य के मामले में राजस्व प्रक्रिया संहिता के तहत आदेश 7 नियम 11 के तहत सर्व सेवा संघ के सिविल उद्घोषणा वाद को निरस्त करने की सरकार की ओर से की गई प्रार्थना को खारिज कर दिया।

समाज में सर्वोदय विचार की वर्तमान स्थिति - वाराणसी के सर्व सेवा संघ परिसर के ऐतिहासिक महत्त्व के भवनों को बुलडोजर से गिरवा देना गंभीर संवैधानिक और प्रशासनिक विफलता को तो दर्शाता है, साथ ही साथ वह हमारे समाज की वैचारिक असहिष्णुता को भी दर्शाता है कि हम हमारे समाज में ही जन्मे लोगों के विचारों के प्रति कतई सदाशयता नहीं रखते हैं। आज राजनीति विज्ञानियों के समक्ष एक गम्भीर प्रश्न खड़ा हो गया है कि भारतीय संविधान के लक्ष्यों एवं आदर्शों का भविष्य कितना शेष है?

- डॉ. रवि प्रकाश गुप्त

गतांक से आगे...

गैर कानूनी तरीके से एक ऐतिहासिक विरासत का गिराया जाना

देश भर में प्रतिरोध की गूंज

इस शर्मनाक घटना के बाद देशभर के सभी सर्वोदय मंडलों और सामाजिक संगठनों में अपने-अपने जन प्रतिनिधियों से मिलकर और जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। अनेक जगहों – इलाहाबाद, फरुखाबाद, कानपूर, लखनऊ, बलिया, उन्नाव, पटना, छपरा, गया, भागलपुर, बम्बई, वर्धा, अमरावती, यवतमाल, कोलाहपुर, घूलिया, भुनेश्वर, पुरी, कटक, कोरापुट, बंगाल, आसाम, उत्तराखंड, केरल, कर्नाटक, तेलंगाना आदि राज्यों में उपवास रखा गया और जलूस निकाला गया।

विनोबा जयंती से पदयात्रा की शुरुआत

वाराणसी में 11 सितम्बर विनोवा जयंती से जे पी जयन्ती तक 1 महीने विरासत बचाओ पदयात्रा करने का तय हुआ। पदयात्रा 21 दिन शहर और 10 दिन ग्रामीण इलाको में की गयी। शहर की यात्रा 11 सितम्बर को सर्व सेवा संघ के पास वरुणा गंगा के संगम पर स्थित आदिकेशव मन्दिर से शुरू हुई। यात्रा का आरम्भ उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल के पूर्व अध्यक्ष डा. मधुसुदन उपाध्याय के संबोधन सन्देश से शुरू हुई। यात्रा राजघाट, प्रहलाद घाट, काल भैरव, मैदागिन, चौक, घंटाघर, गोदौलिया, सोनारपुरा, लंका, सुन्दरपुर, करौदी, कंदवा, डी एल डब्लू, लहतारा, कैंट, चौकाघाट, पांडेपुर, शिवपुर, लमही से होकर सारनाथ में 1 अक्टूबर को समाप्त हुई। यह यात्रा 21 दिन तक बनारस के करीब 60 वार्डो और 100 से अधिक मुहल्लों में पहुची। इस यात्रा में पर्चा बांटा गया और सभाएं की गयीं।

ग्रामीण इलाके की पदयात्रा

2 अक्तूबर से ग्रामीण इलाके की पदयात्रा कैथी, मारकंडे महादेव मंदिर से शुरू हुई। वहां से चौबेपुर, मंगारी, चोलापुर, शिवपुर, हरहुआ, कोइराजपुर, कोरौती, खेवली, चौखण्डी, जंसा, हरसोस, नागेपुर, बेनीपुर, करधना, मिर्जापुराद, राजातालाब, भीमचंडी, देउरा,

मोहनसराय, रोहनिया, चांदपुर, लहरतारा, फुलवरिया होकर 19 अक्तूबर को कचहरी पहुंची और सभा में शामिल हो गयी। इस ग्रामीण पदयात्रा में लोक समिति और लोक चेतना समिति की टीम ने पूरी उत्साह और समर्पण के साथ विरासत बचाओ यात्रा का संदेश और पर्चा गाँव-गाँव तक पहुंचाया।

दिल्ली और पटना से चली यात्राएं

दिल्ली से 6 अक्तूबर और पटना से 8 अक्तूबर को यात्रा शुरू हुई। दिल्ली-वाराणसी यात्रा दिल्ली राजघाट गाँधी समाधि से 6 अक्तूबर को मेघा पाटकर, प्रो. आनंद कुमार, संदीप पाण्डे, फैजल खान, गुड्डी बहन, फिरोज मीठी बोरवाला, डा. संत प्रकाश के नेतृत्व में गाजियावाद, मेरठ, संभल, मुरादाबाद, बरेली, शाहजहापुर, होकर लखनऊ पहुंची। लखनऊ से प्रयागराज होकर 10 अक्टूबर को शाम वाराणसी पहुंची|

पटना - वाराणसी यात्रा

8 अक्तूबर को जयप्रकाश नारायण कि पुण्यतिथि के अवसर पर उनके निवास कदमकुआं, पटना से आरम्भ होकर जे पी के जन्मस्थान सिताबदियारा, छपरा, बलिया, गाजीपुर होते हुए 11 अक्तूबर को शास्त्री घाट, वाराणसी पहुंची। इस यात्रा में सुशील कुमार, पंकज जी, प्रियदर्शी, कारू, ईश्वरचंद्र आदि प्रमुख रूप से शामिल थे।

हस्ताक्षर अभियान

बनारस के लोगों और देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों में विरासत बचाओ अभियान का सन्देश पहुंचाने के लिए अलग-अलग महत्वपूर्ण स्थानों पर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया और पर्चे बांटे गए। पहले चरण में सार्वजनिक जगहों – कचहरी, वाराणसी कैंट स्टेशन, सिटी स्टेशन, बस अड्डा, जिला अस्पताल कबीरचौरा पर अभियान चलाकर हस्ताक्षर करवाया गया। दूसरे चरण में शिक्षण संस्थाओ - काशी विद्यापीठ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, यू पी कालेज, हरिश्चन्द्र डिग्री कालेज, आर्य महिला डिग्री कालेज आदि जगहों के बाद कई मोहल्लों राजघाट, अस्सीघाट, दशाश्वमेध घाट, राजेंद्र प्रसाद घाट आदि जगहों पर भी हस्ताक्षर अभियान चलाकर पर्चे बांटे गए।

मीडिया से संवाद

आन्दोलन के इस पूरे दौर में कई बार प्रेसवार्ता भी करनी पड़ी। प्रेसवार्ताओं को मुख्य रूप से प्रो. आनंद कुमार, योगेन्द्र यादव, मेघा पाटेकर, चन्दनपाल, तुषार गाँधी, अमरनाथ भाई, राकेश टिकैत, विजय नारायण, जागृति राही, रामधीराज, नन्दलाल मास्टर, अरविन्द्र अंजुम ने सरकार द्वारा फैलाये जा रहे झूठ के खिलाफ तथ्यों के साथ सच्चाई को उजागर किया।

राजा नंगा है

राजा नंगा है, कहते ही पुलिस बौखला गयी। 12 अगस्त को ध्वस्तीकरण की घटना के बाद 15 अगस्त को स्वतंत्रा दिवस के अवसर पर सर्व सेवा संघ के गेट पर ही झंडा फहराने और गाँधीजी की मूर्ति पर माल्यार्पण करने का फैसला लिया गया। उस दिन गेट पर भारी पुलिस फ़ोर्स पहले से ही तैनात थी। जब हम लोग वहा पहुंचे तो पुलिस ने झंडा फहराने से रोक दिया। गेट से थोडा हटकर छिनाझपटी के बीच झंडा फहराने में तो सफल हो गये, लेकिन पुलिस का कहना था कि यहाँ पर कोई भाषण नहीं होगा। केवल राष्ट्रगान कर सकते हैं। हमलोगों का कहना था कि आज स्वतंत्रा दिवस है, क्या आज के दिन भी हमें बोलने की आजादी नहीं है।

उस दिन कार्यक्रम के मुख्य अथिति प्रो. आनंद कुमार थे। उन्होंने कहा कि इस समय सरकार घबराई हुई है, मौसम बदल रहा है। पतझर का मौसम है, आजादी के पौधे सूख रहे हैं। मणिपुर में सूख रहा है, मेवात में सूख रहा है, राजघाट में सूख रहा है। केवल उसके नौकर-चाकर हरे-भरे हैं, बाकी जनता दुखी है। क्या हो गया है लोकतंत्र के राजा को, राजा नंगा हो गया है, लेकिन कौन कहे कि राजा नंगा हो गया है। यह कहते ही कि राजा नंगा है, पुलिस एकदम से झपट पड़ी और उसने जबरन भाषण को रोक दिया। सभा आगे नहीं चलने दी। आजादी के दिन भी आप आजादी से बोल नहीं सकते है। बिना इमरजेंसी लगाये इमरजेंसी है।

माँ गंगा के माध्यम से पुत्र को भेजा गया पत्र

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी (7 जुलाई 2023) वाराणसी आये थे। उनसे मिलाने का समय माँगा गया, लेकिन उनके कार्यालय ने मिलने का समय नहीं दिया। तब रविदास घाट पर जाकर प्रधानमंत्री के नाम लिखा गया पत्र, गंगा में प्रवाहित कर दिया गया और माँ गंगा से निवेदन किया कि आपका पुत्र हमें मिलने का समय नहीं दे रहा है। हमारी बात नहीं सुन रहा है, इसलिए आप अपने पुत्र को यह हमारी अरजी पहुंचा दीजिये। पत्र को गंगा में प्रवाहित कर दिया गया। इस कार्यक्रम में प्रो. आनंद कुमार, कांग्रेस नेता अजय राय और राजेश मिश्र (पूर्व सांसद), अरविंद अंजुम, नन्दलाल मास्टर, जागृत राही आदि सहित सैकड़ो की संख्या में लोग उपस्थित थे।

संघ प्रमुख मोहन भागवत को पत्र

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत एक सप्ताह तक वाराणसी में रुके थे। उनसे भी मिलने का समय माँगा गया, लेकिन उन्होंने भी मिलने का समय नहीं दिया, तो ई-मेल और रजिस्टर्ड डाक से उन्हें निवेदन पत्र भेज दिया गया।

संविधान दिवस 26 नवम्बर 2023

सर्व सेवा संघ का ध्वस्तीकरण संविधान व कानून का उलंघन है। दुनिया की सभी सरकारें अपनी ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित करती है किन्तु मोदी सरकार ने अपनी एक राष्ट्रीय धरोहर को नष्ट कर दिया। इस आशय का सन्देश पूरे देश में वीडियो और यात्राओं के माध्यम से चलाया गया।

नये रूप में शुरू हुआ प्रकाशन

जिस प्रकाशन को मोदी की निरंकुश बर्बर सत्ता ने 22 जुलाई 2023 को नष्ट कर दिया था, वह 6 महीने बाद पुन: नये रूप में, नये तेवर के साथ 2 दिसम्बर 2023 को शुरू हो गया। इस अवसर पर संकल्प लिया गया कि भींगी और नष्ट किताबों को प्रकाशन और आन्दोलन के साथी लोगों के बीच में लेकर जायेंगे, खासकर विद्यालयों में यह बताएँगे कि मोदी सरकारी ने गांधी, विनोवा, जयप्रकाश के जिन किताबों को नष्ट किया था, उस बची हुई किताबों को हम आपके बीच लेकर आये हैं। आप पढ़ें और बतायें कि इसमें कौन सी राष्ट्र विरोधी, धर्म विरोधी, समाज विरोधी या अश्लील साहित्य है। इस उद्घाटन अवसर पर सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष चन्दन पाल, अरविंद अंजुम, नन्दलाल मास्टर, डा. कमालुद्दीन डा. जयप्रकाश पाल आदि लोग उपस्थित थे।

चुनौती 2024

9-10 दिसंबर को सेवाग्राम, वर्धा में सर्व सेवा संघ के कार्यालय में 2024 लोकसभा चुनाव को मद्देनजर राष्ट्रीय बैठक हुई, जिसमे देश के कई राज्यों के प्रमुख लोग आये थे। इस बैठक में तय हुआ कि मोदी सरकार के काले कारनामों को जनता को बताने के लिए देशभर में यात्राएं आयोजित किया जाए। पहली यात्रा चंडीगढ़ से अमृतसर की गयी। इस यात्रा में सरदार दया सिंह, वरिष्ठ पत्रकार आनंद वर्धन, कैप्टन सरदार घुम्मन, सरदार बख्तावर सिंह, रामधीरज, अनोखे लाल, पत्रकार अजय शुक्ला आदि लोग शामिल थे। यह यात्रा गुरदासपुर, जम्मू, अमृतसर, गुरुद्वारे पहुंची। गुरुद्वारों के मुख्य ग्रंथि सरदार सिंह से मुलाकात हुई। उन्होंने इस यात्रा को पूरा समर्थन दिया। इसके अलावा बुन्देलखंड और पूर्वांचल के 23 जिलों में यात्राएं की गयीं और जनता से सीधे संवाद हुआ।

गाँधी - बापू का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान

30 जनवरी 2024 को देशभर में हजारों जगहों पर लोगों ने 12 अगस्त सर्व सेवा संघ को गिराये जाने की घटना को गाँधी विचार को मरने के रूप में लिया है। सांप्रदायिक ताकतों ने पहले गाँधी को मारा, अब सर्व सेवा संघ प्रकाशन, गुजरात विद्यापीठ और साबरमती आश्रम को अपने काब्जे में लेकर गाँधी विचार को मारने की कोशिश की जा रही है। सेवाग्राम, वर्धा, नागपुर, इलाहाबाद, पटना, भुवनेश्वर, लखनऊ, वाराणसी में भी नफरत फ़ैलाने वाली ताकतों का सीधे तौर पर मुकाबले का संकल्प दोहराया गया। वाराणसी के शहीद पार्क में फादर आनंद, चित्रा व सुनील सहस्रबुद्धे, अरविंद अंजुम आदि लोगों ने सभा कर संकल्प लिया।

विनोबा की विरासत को बचाने का संकल्प

18 अप्रैल 2024 को भूदान दिवस मनाया गया। 14 साल तक लगातार पदयात्रा करके विनोवा भावे ने करीब 50 लाख एकड़ जमीन दान में प्राप्त किया और उसे

गरीबो में बाट दिया। जो विनोवा भावे भारत के प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही थे और भूदान आन्दोलन के प्रेणेता थे, उनके द्वारा स्थापित आश्रम (साधना केंद्र) को मोदी सरकार ने मटियामेट कर दिया। भुनेश्वर मुंबई, यवतमाल, इलाहबाद, वाराणसी में विनोबा भावे द्वारा स्थापित सर्व सेवा संघ के पुनर्निर्माण का उपस्थित साथियों ने संकल्प लिया।

संविधान यात्रा

27 मई को महात्मा गांधी के पपौत्र तुषार गांधी वाराणसी में थे। उनके नेतृत्व में सैकड़ों लोगों ने संविधान की प्रस्तावना को हाथ में लेकर तथा सिर पर गाँधी टोपी, राष्ट्रीय झंडे के साथ टाऊनहाल से शुरू होकर गोदौलिया, चितरंजन पार्क होकर राजेंद्र प्रसाद घाट पहुंचे। वहां तुषार गाँधी ने पदयात्रियों को संबोधित करते हुए कहा कि ये नफरत फ़ैलाने वाली सरकार है, इसने पहले गाँधीजी को मारा था, अब गाँधी साहित्य और उनके आश्रमों को नष्ट कर रहे हैं। वे सफल नहीं होंगे, क्योंकि सत्य कभी मरता नही है।

अवैध कब्जे और सत्ता के मनमानेपन के एक वर्ष

22 जुलाई को मोदी सरकार द्वारा अवैध और गैरकानूनी तरीके से किये गये कब्जे के एक वर्ष हो गए। इस मौके पर सर्व सेवा संघ और बनारस के अन्य सामाजिक संगठनों ने सर्व सेवा संघ के गेट पर बैठकर दिन भर धरना दिया और राष्ट्रपति को ज्ञापन देकर माँग किया कि इस जमीन को सर्व सेवा संघ को क्षतिपूर्ति सहित वापस किया जाए।

इस अवसर पर सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष चन्दन पाल, अरविंद अंजुम, रामधीरज, इलाहबाद से सतेन्द्र सिंह, जौनपुर से सिराज अहमद, गाजीपुर से ईश्वरचंद्र व ओम प्रकाश बिहार, आरा से सुशील, चम्पारण से पंकज जी, सत्यनारायण, अनिल सिंह आदि के अलावा बनारस से कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय, प्रजानाथ शर्मा, संजीव सिंह, जागृति राही, नन्दलाल मास्टर, राघवेन्द्र चौबे आदि लोग बड़ी संख्या में शामिल थे।

दिल्ली के जन्तर मन्तर पर ध्यानाकर्षण सत्याग्रह

5 अगस्त 2024 को दिल्ली के जन्तर मन्तर पर ध्यानाकर्षण सत्याग्रह आयोजित किया गया और राष्ट्रपति को ज्ञापन दिया गया।

इस अवसर पर कई सांसद, देश के प्रमुख पत्रकार, मजदूर नेता और गाँधी संस्थाओं के प्रमुख उपस्थित थे। ध्यानाकर्षण सत्याग्रह में कांग्रेस के नेता और सांसद दिग्विजय सिंह, सपा के सांसद रामजी लाल सुमन, राष्ट्रीय जनता दल के सांसद सुधाकर सिंह, कांग्रेस के सांसद धरमवीर गाँधी, किसान नेता डा. सुनीलम, हिन्द मजदूर सभा के राष्ट्रीय महासचिव हरभजन सिंह सिद्धू, A.D.R. के संयोजक डा. जगदीप छोकर, विजय प्रताप, सत्यमेव जयते संगठन के डा. श्यामधर तिवारी, जे पी फाउंडेशन के डा. शशिशेखर सिंह, खुदाई खिदमतगार के फैजल खान, हरियाणा से सतीश मराठा व जय भगवान शर्मा, आगरा के अशोक भाई और चंद्रमोहन पारासर, हापुड़ के नानक चन्द्र शर्मा, कानपुर के सुरेश गुप्ता आदि सैकड़ों लोग शामिल थे।

नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी से मिला प्रतिनिधि मण्डल

6 अगस्त 2024 को सर्व सेवा संघ का एक प्रतिनिधि मण्डल नेता प्रतिपक्ष से उनके संसद भवन कार्यलय में मिला। प्रतिनिधि मण्डल ने उनके सामने तीन बातें रखीं - (1) लोक सभा में सवाल उठायें, (2) एक संसदीय समिति जांच के लिए सर्व सेवा संघ जाए और अपनी रिपोर्ट दे, (3). गाँधीजनों और जन आंदोलनों के साथियों के साथ एक संवाद बैठक सेवाग्राम में किया जाये, जिसमें आप आयें। इन तीनो मुद्दों पर राहुल गांधी ने अपनी सहमती जताई।

ध्वस्तीकरण के पूरे हुए 365 दिन

12 अगस्त को मोदी सरकार के निर्देश पर वाराणसी प्रशासन ने सर्व सेवा संघ को ध्वस्त कर दिया था। ध्वस्तीकरण के एक वर्ष पूरे होने पर सर्व सेवा संघ और गाँधीवादी समर्थकों ने 12 अगस्त को दिन भर का उपवास रखा। शाम को सर्वधर्म प्रार्थना और राष्ट्रगान के साथ सत्याग्रह समाप्त किया गया। कार्यक्रम के अंत में जुलूस निकाल कर गाँधी विद्या संस्थान के गेट पर गए। अन्दर जाकर जे पी की मूर्ति पर माल्यार्पण करना चाहे, लेकिन वहां के कर्मचारियो ने अन्दर जाने नहीं दिया।

22 जुलाई और 12 व 15 अगस्त तीनों दिन गाँधीजी की मूर्ति पर तो हम माल्यार्पण कर सके, लेकिन गाँधी विद्या संस्थान में जहां जयप्रकाश जी की मूर्ति है और जो अभी इंदिरा गाँधी राष्ट्री कला केद्र के कब्जे में है, वहां हम माल्यार्पण नहीं कर सकते हैं। सर्व सेवा संघ का वर्तमान संघर्ष का दौर एक वर्ष से अधिक हो गया, लेकिन हम न ही थके हैं, न ही हारे हैं, न हारेंगे। यह हमारा संघर्ष जारी रहेगा।

अब आगे कि लड़ाई वापसी और नवनिर्माण की है और सत्ता में बैठे मदमस्त सत्ताधीशों से है। यह विरासत की लड़ाई है। गाँधी, विनोवा, जे पी भारत के महानायक हैं, इनकी संस्थाओ पर हमला उनके विचारों पर हमला है। यह जमीन नहीं, विचारों की लड़ाई है। हम लड़ेंगे और जीतेंगे।

प्रस्तुति : रामधीरज, नंदलाल मास्टर, तारकेश्वर सिंह, विनोद जायसवाल, जागृति राही एवं अवनीश

अभिव्यक्ति की आजादी और राज्य की संस्थाओं को नियंत्रित करने का खतरा बढ़ गया है

न्याय के दीप जलाएं- 100 दिनी सत्याग्रह आज अपने 31 में दिन में प्रवेश कर गया। आज भारत छोड़ो आंदोलन के नायक, सर्वोदय के समर्पित कार्यकर्ता, जनतांत्रिक एवं संघीय राष्ट्रनिर्माण के वास्तुकार तथा संपूर्ण क्रांति आंदोलन के प्रवर्तक जयप्रकाश नारायण की जयंती है। इसलिए आज का सत्याग्रह **मणिपुर की शांति और लद्दाख की स्वायत्तता** के लिए समर्पित है। आज का सत्याग्रह सोनम वांगचुक के द्वारा किए जा रहे उपवास को अपना पूर्ण समर्थन देती है। साथ ही केंद्र सरकार से यह मांग सकती है कि मणिपुर में बिना किसी पक्षपात के शांति बहाली हो और लद्दाख को राजनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित किया जाए।

जेपी जयंती के अवसर पर यहां एक सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता विद्याधर और संचालन जागृति राही ने किया। सभा को मजदूर किसान परिषद के चौधरी राजेंद्र, विनय राय,संजीव सिंह एवं रामधीरज ने संबोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि आज अमृत कालखंड में लोकतंत्र खतरे में पड़ गया है। संविधान के द्वारा भारत के आम नागरिकों को जो मौलिक अधिकार दिए गए हैं, उन्हें एक-एक कर छीना जा रहा है और राज्य की संस्थाओं को नियंत्रित किया जा रहा है। यह कितने दुख की बात है कि जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने तक से रोका जा रहा है। आज लखनऊ में पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव को जेपी एन आई सी जाने से रोकने का प्रयास किया गया जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर सीधा हमला है। चुनाव आयोग की निष्पक्षता के प्रति लगातार संदेह बढ़ता जा रहा है। चुनाव प्रक्रिया से संबंधित जो भी सवाल उठाए जाते हैं उन्हें या तो नजरअंदाज किया जाता है या फिर इसका संतोषजनक जवाब नहीं दिया जाता। देश के कई हिस्से अशांत है। मणिपुर जल रहा है और लद्दाख बेचैन है। सरकार पक्षपात कर रही है। वक्ताओं ने मणिपुर में शांति कायम करने तथा लद्दाख में राजनीतिक स्वायत्तता स्थापित करने की मांग की उन्होंने सोनम वांगचुक के आंदोलन का समर्थन किया।

आज के सत्याग्रह और जेपी जयंती के कार्यक्रम में मो अकीफ, विनोद जयसवाल, संजीव सिंह, विनय शंकर राय, फ्लोरिन, रामदयाल, ललित नारायण, जयप्रकाश भाई, मदन फूलपुर, मीनू सिंह, आरती, सुभाष दीक्षित, नरेंद्र पांडे, सरोज शर्मा, आलोक सहाय, अनूप आचार्य, सुशील कु सिंह, अश्विनी शुक्ला, अनंत सिंह, सुरेंद्र नारायण सिंह, डॉ जयशंकर जय, तारकेश्वर सिंह, नंदलाल मास्टर आदि शामिल रहे।

- स.ज. डेस्क

डॉ राम मनोहर लोहिया का निर्वाण दिवस तथा सर्व सेवा संघ के पूर्व मंत्री राधाकृष्ण की जयंती

12 अक्टूबर 2024, समाजवादी आंदोलन के तेजस्वी नेता और विचारक डॉ राम मनोहर लोहिया का निर्वाण दिवस तथा सर्व सेवा संघ के पूर्व मंत्री राधाकृष्ण की जयंती थी। आज से राधाकृष्ण शतवार्षि की समारोह का प्रारंभ हो रहा है। सत्याग्रह स्थल पर दोनों विभूतियों को याद किया गया और उन्हें हार्दिकता के साथ श्रद्धांजलि दी गई। सर्व सेवा संघ के पूर्व मंत्री राधाकृष्ण एक मेधावी छात्र थे जिन्हें सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पहचाना और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए प्रेरित किया। इंडस्ट्रियल केमिस्ट्री में उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद वे नौकरी करने की बजाय सेवाग्राम चले गए। नई तालीम के प्राचार्य बने फिर बाद में विनोबा जी के कहने पर सर्व सेवा संघ के मंत्री बने और सपरिवार राजघाट, वाराणसी स्थित सर्व सेवा संघ परिसर में रहने लगे। इस परिसर को व्यवस्थित करने में उनकी यादगार भूमिका रही है। जयप्रकाश नारायण ने राधाकृष्ण के एकेडमिक सामर्थ्य को देखते हुए गांधियन इंस्टीट्यूट के संचालन समिति में रखा था। आज इसी गांधियन इंस्टिट्यूट को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने हड़प लिया है। राधाकृष्ण एवं नारायण देसाई ने नगा और कश्मीर के मसले पर जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जयप्रकाश नारायण ने उन दोनों को कोडईकनाल में नजर बंद कर रखे गए शेख अब्दुल्ला से बातचीत के लिए भेजा। इस बातचीत की रिपोर्ट के आधार पर शेख अब्दुल्ला को रिहा किया गया। 1962 से 1969 तक सर्व सेवा संघ परिसर में रहने के बाद उन्हें गांधी शांति प्रतिष्ठान का सचिव नियुक्त किया गया जहां उन्होंने 21 वर्षों तक सेवा दी। राधा कृष्ण अपने जीवन के अंतिम कालखंड में गांधी पीस सेंटर की स्थापना की और आजीवन युवाओं को सामाजिक कार्य की ओर उन्मुख और सहयोग करने में लगे रहे।

इस अवसर पर समाजवादी चिंतक महेश विक्रम ने कहा कि डॉक्टर लोहिया ने राजनीति की सामाजिक संरचना को बदलने का खाका तैयार किया था जिसका उद्देश्य सामाजिक न्याय के रास्ते सामाजिक समता के लक्ष्य तक पहुंचना था। राजनीति का सामाजिक ताना-बाना तो बदल गया, सामाजिक न्याय भी एक हद तक हासिल हुआ लेकिन सामाजिक कसमता का लक्ष्य अभी अधूरा है । डॉक्टर लोहिया को याद करने का अर्थ है समता की चाह को जीवित रखना। जागृति राही ने लोहिया जी के बारे में अपना मंतव्य रखा कि उस जमाने में नर- नारी समता की बात करने वाले अप्रतिम राजनेता थे। उन्होंने मिथकों को सकारात्मक अर्थ देने का प्रयास किया है। राम धीरज ने राधा कृष्ण को याद करते हुए कहा कि उन्होंने गांधी विचार को संस्थागत रूप देने का अद्वितीय उद्यम किया है। युवाओं को जोड़ना और सामाजिक जीवन में उनकी निरंतरता बनाए रखने की व्यवस्था करना उनका एक यादगार योगदान है।

सत्याग्रह में चौधरी राजेंद्र और फादर आनंद के अलावा जागृति राही, प्रो. महेश विक्रम, सिस्टर फ्लोरिन, राम दयाल, ईश्वरचंद्र, महेन्द्र, अभिनव त्रिपाठी, जितेन्द्र राजभर, मीनू, संध्या, पुष्कर, कैलाश विनोद, जोखन यादव, राम पाल, तारकेश्वर सिंह, अनूप आचार्य, आर्यन, सुरेंद्र नारायण सिंह, अर्थ सिंह आदि सहभागी रहे।

गुमटी विक्रेताओं का उत्पीड़न के विरोध में अनिश्चित कालीन धरना

लंका, वाराणसी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मुख्य द्वार से नरिया मार्ग पर करीब पचास पथ विक्रेता कई दशकों से अपने ठेले लगा रहा हैं। इनके पास 985 की जब वि.वि. इनसे छह माह का रु. 62 शुल्क लेता था उसकी रसीदें हैं। ये, जो वि.वि. से सटी सीमा दीवार के बाहर ठेले लगाते हैं, सीमा के भीतर सर सुंदरलाल अस्पताल के मरीजों एवं तीमारदारों को जरूरी खाने पीने की चीजें मुहैया कराते हैं।

किंतु जबसे नरेन्द्र मोदी वाराणसी से सांसद चुने गए हैं इनके लिए तो जैसे मुसीबत का पहाड़ ही टूट गया है। मुख्यमंत्री और आला अधिकारियों सहित भाजपा मंत्री आए दिन स्मार्ट सिटी बनारस में दर्शन पूजा आदि कार्यक्रम में आते रहते हैं। वीआईपी आगमनके नाम पर अब तो रोज़ठेले वालो से पुलिस मारपीट कर रही है और उन्हें दूकान लगाने नहीं दे रही है।

जिला नगरीय विकास अभिकरण के 26 जुलाई 2019 के पत्र में परियोजना अधिकारी ने गुमटी व्यवसाय कल्याण समिति के अध्यक्ष चिंतामणि सेठ को नगर पथ विक्रय समिति का सदस्य दर्शाया है। लंका नरिया मार्ग को 50 धारण क्षमता वाला विक्रय क्षेत्र भी दर्शाया गया है। चिंतामणि सेठ एवं अन्य पथ विक्रेताओं के पास सर्वेक्षण के बाद जारी किए गए प्रमाण पत्र हैं। इनमें से 54 पथ विक्रताओं को प्रधान मंत्री स्ववनिधि योजना के तहत ऋण भी दिए गए हैं। यानी ये पथविक्रेता अपना व्यवसाय वैध तरीके से कर रहे थे।

28 दिसम्बर 2023 को अचानक पुलिस व नगर निगम के अधिकारी आए और बिना कोई सूचना दिए करीब 20 ठेले और उनका सामान जब्त कर लिए गए। पहले भी ठेले जब्त होते थे किंतु कुछ वैध-अवैध जुर्माना लेकर नगर निगम द्वारा पथविक्रेताओं के ठेले छोड़ दिए जाते थे। किंतु इस बार नगर निगम कह रहा है कि पहले पुलिस की अनुमति लेकर आएं तब उनके ठेले छोड़े जाएंगे। किसी तरह रु.1000-500 लेकर ठेले छोड़े गए। रसीद दी गई है प्लास्टिक का उपयोग करने के जुर्माने की।

3 सितम्बर, 2024 को पुलिस ने बर्बरतापूर्वक लाठी चला कर ठेले वालों को पुनः हटा दिया। चिंतामणि सेठ को नगर पथवविक्रय समिति से हटा दिया गया है। 9 अक्टूबर को भेलूपुर नगर निगम क्षेत्रीय कार्यालय पर धरने के बाद संयुक्त नगर आयुक्त इस बात के लिए तैयार हुए कि अगले दिन से ठेले लगेंगे किंतु पुलिस ने नहीं लगाने दिए।

प्रधान मंत्री तो बड़े-बड़े विज्ञापन लगवा कर रेहड़ी पटरी दुकानदारों के लिए स्वनिधि योजना का श्रेय ले रहे हैं किंतु धरातल पर उन्हीं के संसदीय क्षेत्र में दशकों से ठेला लगा रहे दुकानदारों को उजाड़ दिया गया है। जब प्रधान मंत्री के संसदीय क्षेत्र में यह हो सकता है तो बाकी जगह का क्या हाल होगा इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

भारतीय जनता पार्टी की सरकार की यही विशेषता है - विज्ञापन तो रंगीन हैं लेकिन हकीकत स्याह है। जिलाधिकारी, नगर निगम, डूडा, प्रदेश शासन और केंद्रीय सरकार के सभी सम्भव दरवाजों को खटखटाने बाद निराश पटरी विक्रेताओं ने अब तय किया है की लंका नरिया मार्ग पर बीएचयू अस्पताल से सटी बाहरी दीवार के पास 14/10/2024 से अनिश्चितकालीन धरने पर बैठेंगे।

बनारस के सभी ठेले पटरी विक्रेताओं से और आमजन से अपील करता है कि धरना स्थल पर आकर पिछले एक महीने से रोजी रोटी के संकट से जूझ रहे विक्रेताओं के संघर्ष को मजबूती प्रदान करें और ससम्मान आजीविका चलाने में मदद करें।

बालिका महोत्सव कार्यक्रम का आगाज

लोक समिति वाराणसी और आशा ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में बालिका महोत्सव कार्यक्रम का आगाज हो चुका है आज बीरभानपुर गांव में मंगलवार को लड़कियों ने कन्या भ्रूण हत्या, यौन उत्पीड़न, दहेज़, बाल विवाह जैसे सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ रैली निकाली। रैली में शामिल लड़कियां, भ्रूण हत्या पर रोक लगाओ, बाल विवाह बंद करो, तिलक दहेज़ छोडो जाती पाती तोड़ो, भीख नही अधिकर चाहिए जीने का सम्मान चाहिए आदि नारे लगा रही थी । लड़कियों ने बाल विवाह दहेज पर रोक लगाने की मांग किया। रैली में बीरभानपुर, खेवली, हरसोस, नागेपुर, कपड़फोड़वा, हरपुर, कचनार आदि गांव की सैकड़ों किशोरियों और महिलाओं ने भाग लिया, पंचायत भवन बालिका महोत्सव कार्यक्रम में अपनी मांगों को लेकर कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

- स.ज. डेस्क

क्या दलीय लोकतंत्र से आगे कोई रास्ता...

... यदि इस 'पार्टिसिपेटिव डैमोक्रेसी' – जिसमें खुद जनता भाग लेती है ऐसा लोकतंत्र चाहते हो तो गांधीजी के ग्रामराज की तरफ ध्यान देना ही पड़ेगा। हमारा लोकतंत्र बहुत संकुचित आधार पर टिका हुआ है। हमें लोकतंत्र की नयी बुनियाद, नयी आधारशिला रखनी होगी।

प्रक्रिया के संकेत

उदाहरण के तौर पर विधानसभा के चुनाव के लिए एक निर्वाचन क्षेत्र है। उसमें 100 गांव हैं, उनका लोकशिक्षण करना होगा, लोगों को समझाना पड़ेगा कि चुनाव में आप स्वयं अपना उम्मीदवार खड़ा करें, गांवों में कुछ सक्रियता आये, शक्ति आये, जागृति आये और मिल-जुलकर काम करने का कुछ अभ्यास हो, तो यह हो सकेगा।

इसकी पद्धति के बारे में थोड़ा-बहुत विचार किया जा सकता है। पहले तो हर एक गांव निर्वाचन-क्षेत्र की जनसंख्या के अनुसार अपने एक-दो या तीन-चार आदमी पसंद करेगा। यदि गांव छोटी-छोटी इकाइयों में, जिन्हें हम ग्रामसभा कह सकते हैं, विकेन्द्रित रूप से यह करे तो उचित होगा। यदि ग्रामसभा छोटी है तो वह एक आदमी को पसंद करेगी और यदि कोई बड़ा गांव होगा तो वह चार-पांच लोगों को पसंद करेगा। इस तरह 100 गांवों में से औसतन तीन के हिसाब से लगभग 300 लोगों को गांव वालों ने पसंद किया। ये लोग किसी दल के नहीं, बल्कि ग्रामसभाओं द्वारा पसंद किये गये प्रतिनिधि होंगे।

इन सभी प्रतिनिधियों का एक 'ग्रामसभा-प्रतिनिधि मण्डल' बनेगा। वे सब मिलकर अपने में से एक व्यक्ति को उस मतदान क्षेत्र के उम्मीदवार के रूप में पसंद करेंगे। पसंदगी की पद्धति भी उन्हें समझायेंगे। कहेंगे कि सर्व-सम्मति से किसी एक को ही पसंद करें और यदि संभव न हो तो 'एलिमिनेशन' की प्रक्रिया से पसंद करें। उदाहरण के तौर पर 4-5 उम्मीदवार खड़े हों, तो तीन-चार बार मतदान कराकर जिसे सबसे कम मत मिले उसे एक-के-बाद-एक निकालते जायें, अंत में जो एक रहे उसे ही उम्मीदवार के रूप में पसंद हुआ समझें।

इस तरह जो उम्मीदवार खड़ा होगा वह वस्तुतः जनता का उम्मीदवार होगा। यदि ग्रामसभाएं जागृत होंगी तो स्पष्ट है कि मत उनके द्वारा खड़े किये गये उम्मीदवार को ही मिलेंगे और वही चुना जायेगा। इसमें दल का उम्मीदवार हो या जनता का, मात्र इतना ही भेद नहीं है, बल्कि मूल बात यह है कि आज तो जनता मिलकर, साथ बैठकर विचार ही नहीं करती। अगर समुदाय, कम्युनिटी सक्रिय होती है तो वह जहां तक संभव होगा, सर्वानुमति से काम करेगी।

दलमुक्त लोकतंत्र

इस तरह जो ग्रामसभाओं द्वारा खड़े किये गये उम्मीदवारों में से चुनकर आये होंगे, वे किसी दल के नहीं, बल्कि सीधे जनता के प्रतिनिधि बनकर आये होंगे। इन दलमुक्त सदस्यों द्वारा दलमुक्त लोकतंत्र की शुरूआत होगी। फिर वे सब मिलकर एक नेता चुनेंगे, जो योग्य व्यक्तियों का एक मंत्रिमण्डल बनायेगा। उसमें फिर एक सत्ताधारी पक्ष और दूसरा विरोधी पक्ष, ऐसा नहीं होगा। विधानसभा के सब सदस्य साथ मिलकर शासन चलायेंगे। प्रशासन-व्यवस्था भी अलग-अलग विभागों के अनुसार की जा सकती है। विधानसभा के सभी सदस्यों को अलग-अलग समितियों में बांट दिया जाये और हर एक समिति को एक-एक विभाग सौंपा जाये। इन समितियों के माध्यम से शासन चलेगा। तब फिर आज जैसी दलीय खींचतान नहीं होगी और न विधानसभा के सदस्य एक दूसरे पक्ष को नीचे गिराने की कोशिश में ही लगे रहेंगे। जनता का हित साधना है। जो भूलें होंगी उनको सुधारना है, यह दृष्टि होगी। इस तरह एक नयी प्रकार की लोकसत्ता का उदय होगा।

आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था में ऐसा कोई क्रांतिकारी कदम उठाया जाये, सारी दुनिया ऐसा चाहती है। आज की प्रातिनिधिक लोकतंत्र से किसी को संतोष नहीं। दुनिया भर के प्रगतिशील विचारक आज प्रत्यक्ष और सहभागी लोकशाही का समर्थन करते हैं। यह काम कोई पुरानी लीक पीटने का काम नहीं है, बल्कि दुनिया की जो सबसे आगे बहने वाली धारा है, उसके साथ-साथ यह विचार है।

साभार - सर्वोदय प्रेस सर्विस

ऑनलाईन पढ़ें spsmedia.in पर

सर्व सेवा संघ प्रकाशन (स्वत्वाधिकारी) के लिए प्रकाशक अरविन्द अंजुम द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक : बिमल कुमार